भारत के स्वप्नदेव

श्री पार्श्वनाथ भद्रावती की अनोखी कहानी

रुपये ५/-

दोस्तों न किसीको गम का संसार दो
और न किसी को छलावट का उपहार दो ।
गांधी या गौतम बनने की गर लालसा हो
तो हर आदमी को आदमीसा प्यार दो ।

किनारों से ले टक्कर उसे तुफान कहतें है
पत्थर से ले टक्कर उसे नादान कहतें है ।
इन्सान से टकराना बहादुरी का काम नहीं होता
अन्याय से टक्कर ले उसे ही इन्सान कहतें है ।

वक्त की ठोकर से गिरे हुओं को चलाना सीखो
प्रतिशोध के दहकते शोलों को गलाना सीखो ।
माटी के दीपक तो हमेशा ही जलाते रहेंगे हम
आज तो नेक दिलसे भावना के दीपक जलाना सीखो ।

– *भंवर सोनी*

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

भारत के स्वप्नदेव

श्री पार्श्वनाथ भद्रावती की अनोखी कहानी

लेखक

रतनलाल आंजोरिया
साहित्यरत्न, वर्धा.

प्रकाशक

श्री जैन श्वेतांबर मंडल
भद्रावती.

मुद्रक

रतिलाल वाडीलाल शाह
श्री प्रिंटींग प्रेस,
चितार ओली चौक, नागपुर-२.
फौन : ४०६६०

ब्लॉक्स

निळकंठराव पडोळे
सुधाकर ब्लॉक मेकर
तिलक पुतला रोड; महाल,
नागपुर-२

दो शब्द........

भगवान महावीर निर्वाण वर्ष में "भारत के स्वप्नदेव" अर्थात श्री पाश्र्वनाथ भद्रावती की अनोखी कहानी प्रस्तुत करते हुए हर्ष होता है । जैन तीर्थ भद्रावती के दो प्रकाशन समाप्त हुए तीन वर्ष हो गये । प्रस्तुत पुस्तक का पुनर्लेखन और प्रकाशन करने मे कुछ आकस्मिक कारणों से अत्याधिक विलंब हो गया है । जिसके लिये हम क्षमा चाहते है ।

ऐतिहासिक दृष्टिसे यथासंभव पुनर्लेखन कार्य हमारे मित्र भाई रतनलाल बाजोरियाने परिश्रमपूर्वक संपन्न किया है। अतएव वे धन्यवाद के पात्र है ।

तीर्थ विवरण के साथ, यत्र तत्र तीर्थसंबंधी तथा पुराने अवशेषों से संबंधित कइ फोटो चित्र भी दिये है । आशा है आप इन्हे जरुर पसंद करेंगे ।

हमारे परम मित्र तथा शुभचिंतक भाई श्री डॉ. रतनकुमारजो जैन एम. कॉम. पी. एच. डी. गो. से. अर्थवाणिज्य महाविद्यालय नागपुर ने अपने सिद्धहस्त लेखनी से तीर्थ और तीर्थयात्राओं पर जो सर्वंकष, प्रेरणादायक और जीवनदृष्टीका विस्तार करनेवाली दर्शनीय प्रस्तावना लिखी है, वह उनके इस तीर्थ के प्रति प्रेम और परमभक्ति की द्योतक है । हम उनके प्रती हृदयसे आभारी है ।

श्री प्रिंटींग प्रेस, चितार ओली, नागपुर के संचालक भाई श्री रतिलालजी शाह तथा प्रेसके समस्त कर्मचारी एवं मेसर्स सुधाकर ब्लॉक मेकर, महाल, नागपुर के श्री पडोळेजी आदि सज्जनों ने इस पुस्तक को सर्वांग सुंदर, आकर्षक और उपयोगी बनाने में जिस आत्मीयता और सहृदयता का परिचय दिया है, उनका जितना गौरव किया जाय थोडा है ।

विनीत,

चेनकरण फत्तेपुरीया
अध्यक्ष
श्री जै. श्वे. मं. भद्रावती

वीर निर्वाण संवत २५०१
श्रा. सु. ८ ता. १४-८-१९७५

प्रस्तावना

१. तीर्थ माहात्म्य :

संसार के प्रायः सभी धर्मावलम्बी लोगों के आध्यात्मिक अनुशासन में तीर्थयात्राओं का महत्त्व-पूर्ण स्थान है। अनेक धर्म के अनुयायी कुछ स्थलों को विशेषरुप से पवित्र, वन्दनीय तथा उपास्य मानते हैं। उनकी मनोकामना रहती है कि कम से कम एक बार उन पवित्र स्थानों की धर्मयात्रा करके जीवन को सफल अवश्य बनाया जाय। मनोरथ-सिद्धि के लिये वे इन धर्मकेंद्रों की वन्दना करने की 'मानता' भी मानते हैं। हां, प्रत्येक स्थान का महत्त्व लोगों की अपनी धार्मिक रुचि, विश्वास ओर सांकल्पिक दृढ़ता के अनुसार घट–बढ़ अवश्य हो सकता है। किंतु, यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि ये केंद्र धार्मिक जीवन में अध्यात्म–साधना के प्रेरणा श्रोत अवश्य होते हैं। प्राणी-मात्र के लिये बन्धुता की भावना, उनमें स्वयमेव विद्यमान रहती है। आत्म–कल्याण का अनहद नाद उनमें निरंतर गूंजता रहता है। संसार-सुख, विश्व-शान्ति और आत्म–संतोष की त्रिवेणी इन पवित्र स्थानों में निरन्तर लहराती रहती है। जीवन–कल्याण, स्थलसिद्धि और मानवीयता के श्रेष्ठतम आदर्शो का दिव्य सन्देश यहां के कण–कण में गूंजता रहता है। तीर्थ–स्थलों की प्राकृतिक सुषमा मूढ़ मन को नितनवीन सौंदर्य बोध से भावाभिभूत कर देती है। उनमें व्याप्त सुरभित वातावरण चमत्कारिक होता हे, और संकल्पसिद्धि की तृप्ति से अन्धकाराच्छादित अन्तरतम का कोना–कोना दिव्य आलोक से मुखरित हो उठता है। वस्तुतः तीर्थ–क्षेत्र सन्तप्त मानवता के लिये सनातन काल से असीम सुख और शान्ति के अखण्ड तथा अक्षय कोष रहे हैं।

२. भारतीय तीर्थ परम्परा :

तीर्थ-संस्था ने "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" के सिद्धान्त-सूत्र को पूर्ण रूप से चरितार्थ किया है। तिर्थयात्रा के माध्यम से श्रद्धालु जनों को देश-दर्शन का विविध रूपात्मक सौभाग्य–लाभ मिल जाता है। तीर्थों का दर्शन करके अनुभव होता है कि राष्ट्र जीवन की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता एकता की ओर प्रवाहित हो रही है और राष्ट्र व्यापी एकता विविधता के सांचों में ढल कर जनजीवन को लोकमंगल का स्थायी आधार प्रदान कर रही है। सचमुच, तीर्थस्थान भारतीय जनजीवन की सांस्कृतिक एकता, लोकजीवन की सामाजिक विवि-धता, और मंगल विचार-प्रवाह की अविच्छेदकता के सर्वोत्तम जीवित स्मारक हैं। तीर्थ–परम्परा ने आध्यात्मिक चैतन्य के सूत्र में भारतीय सामाजिकता के मानवीय प्रसूतों को गूंथ कर विश्वात्मा को पवित्रतम पुष्पहार सर्पपित किया है।

३. श्रमण संस्कृति में तीर्थ–परम्परा :

श्रमण संस्कृति में तीर्थ–परम्परा का विशेष महत्त्व है। 'श्रमण' शद्ब का अर्थ ही होता है घुमक्कड़। श्रमण विचारधारा में एक सिद्धांत-वाक्य है– "जो पर्यटन नहीं करता उसे जीवन में सच्चा सुख और शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। मनुष्यों की संगत में ही रत रहनेवाला श्रेष्ठ पुरुष भी पाप कर्म कर सकता है, अतएव यात्रिक बनो। ईश्वर यात्रिकों का सच्चा मित्र है।" तीर्थ के माध्यम से मनुष्य का भटकता मन आध्यात्मिकता का सहारा लेकर ईश्वरत्व की ओर उन्मुख होता है।

४. तीर्थ सम्बन्धी जैन मान्यता :

जैन मान्यता है कि तीर्थ क्षेत्रों में नग्न चक्षुओं से जो दिखलाई देता है वह महत्त्वपूर्ण नहीं है। बस्तुतः मोहकपाटों को भेद कर जो आत्मप्रतीति होती है और साधना–सिद्धि का जो चमत्कार प्रति-भासित होता है वही जीवन का परम सत्य है।

तीर्थछाया में मनुष्य की संकीर्ण जीवन दृष्टि अनन्त शक्ति के महिमामय विस्तार मे डुबकियां लगाने लगती हैं, मनुष्य का सीमित ज्ञान जीवनव्यापी महानता के चैतन्यबोध से तरंगित होने लगता है, संकुचित सुखाभिलाषा परमार्थसिद्धि की वाटिका बन जाती है और पंगु में पर्वत लांघने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। तीर्थों की शरण में आकर कितने महात्मा पुरुष जीवन-मुक्ति का रहस्य पाकर सिद्ध पुरुष बन गये इसका लेखा–जोखा लगाना शक्य नहीं है।

जैन आगम ग्रंथों में उल्लेख है कि आयतन, चैत्यगृह, प्रतिमा, दर्शन, विम्ब, जिनमुद्रा, ज्ञान, देव, तीर्थ, अर्हत् और प्रव्रज्या, ये ग्यारह धर्म के स्वरुप का सच्चा प्ररुपण करते हैं। आयतन और चैत्यगृह से पंचमहाव्रतधारी महर्षियों के आवास का बोध होता है। प्रतिमा में वन्दनीयता का गुण झलकता है। दर्शन से सम्यकत्व ज्ञान तथा चारित्र्य-रुपी मोक्षमार्ग का आभास मिलता है। बिम्ब में तपश्चर्या का आदर्श परिभाषित होता है। जिनमुद्रा अर्हत् पद-प्राप्ति अर्थात् अन्तिम लक्ष–सिद्धि का प्रतीक है। ज्ञान से ध्यानयोग का भान होता है। देव पद पुरुषार्थ की परम परिणति को व्यक्त करता है। अर्हंत शद्ध आत्म रुप की स्वयंपूर्ण स्वाधीनता का प्रतिपादन करता है, प्रव्रज्या में धर्म, सम्यकत्व, तप और ज्ञान की साधना का समकित रुप प्रतिबिम्बित होता है। तीर्थ से भवसागर के पार करने के लिये तीर या किनारे की प्रतीति होती है। यथार्थतः, यह संसार और मोक्ष के बीच सम्पर्क-स्थल है तथा दुष्कर्म–निवृत्ति, सत्कर्म–प्रवृत्ति, सत्संकल्प अनुरक्ति एवं पाप-प्रक्षालन इसके आधारभूत लक्षण है। तीर्थयात्रा हेयोपादेय का यथार्थ विवेक जागृत करके सरलता से व्यक्ति के जीवन को आत्म स्वातंत्र्य के लिये प्रेरित करती है; तीर्थ–वन्दना से मन में समता, संयम, और शान्ति का उदय होता है; एवं तीर्थ की परिक्रमा से अन्तरचेतना में अविराम आनंदगर्भ दिव्यानुभूति का जागरण होता है। अहिंसा, अविरोध और अनेकांत इस दिव्यानुभूति के सहचरी तत्व हैं।

५. सामाजिक सांस्कृतिक रूप :

तीर्थस्थानों का महत्त्व केवल आध्यात्मिक और धार्मिक ही नहीं है, देश की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा के सर्वमान्य तत्वों के निर्धारण में भी उनका अनुपम योगदान है। दैनिक जीवनचर्या के ढर्रेदार मोहपाश में फंसे लोग तीर्थों में पुण्यप्रेरणा और नवजीवन का संदेश प्राप्त कर सकते हैं। उनके गहन अन्तरतम के बन्द द्वारों को खोलने में तीर्थ-यात्रायें सहायक सिद्ध होती है। कल्याण-कामना की किरणों से उनके कोने–कोने में व्याप्त अन्धकार निमिष मात्र में तिरोहित हो जाता है। नवचैतन्य के दिव्य संगीत से उनका रोम–रोम मुखरित हो उठता है एवं पुलक-प्रकम्पित तन–मन आनन्द–विभोर हो उठता है। सर्वधर्म समभाव, जनजीवन की मौलिक एकता, सार्वभौमिक उदारता और सामाजिक सहिष्णुता के सर्वश्रेष्ठ सन्देशवाहक बन कर तीर्थक्षेत्र मानसपटल पर छा जाते हैं। तीर्थों को धर्मतंत्र के संसद–भवन और आध्यात्मिकता की विधान-सभाओं के रूप में भी समझा जा सकता है। अपने बाहरी भेद-भावों को भूल कर ही व्यक्ति तीर्थयात्रा कर सकता है।

तीर्थक्षेत्रों में श्रीमंतों की दानवीरता प्रतिष्ठित होती है; विद्वानों की विद्या–बुद्धि गौरवान्वित होती है; व्यवसायी प्रतिभा विकसित होती है; कलाकारों को लोकोत्तम मान–सन्मान मिलता है; साधकों की साधना चमत्कृत होती है; एवं स्थापत्य मूर्तियों, चित्रों तथा संगीतादि ललित कलाओं की रचना–प्रक्रिया तथा अंकन में धर्म विशेष का दर्शन प्रस्फुटित हो उठता है। यही कारण है जो भारत की समस्त पर्वतमालायें, नगरवीथियां, गांव-गलियां, शैल–सरोवर, नद–नदियां, हरी भरी उपत्यकायें तीर्थ सुरभि से सुवासित हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि घर–द्वार का मोह छोड़ कर कुछ समय के लिये अभिनिष्क्रमण, आत्मोपलब्धि की दिशा में परिभ्रमण, देश–देशान्तर में फैले जनजीवन से सम्पर्क-साधन, विविधता में एकरुपता का उत्खनन एवं शान्ति तथा संतोष का रसास्वादन, ये तीर्थ–परम्परा के पंचशील हैं।

६. तीर्थ–मेले :

विशिष्ट अवसरों पर मेलों का आयोजन भी तीर्थ–परम्परा का एक मुख्य आकर्षण–केंद्र है। धर्म-प्रभावना, सामाजिक सद्भावना की दृढ़ता, कला–संवर्धन, सद्भिरूचि–प्रकाशन और आर्थिक

लाभ की दृष्टि से मेले तीर्थस्थानों मे एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गये है । इन मेलों में विशाल पैमाने पर धर्म तंत्र के विधि विधान आयोजित किये जाते हैं; सामाजिक-धार्मिक संगठनों के अधिवेशन रचे जाते हैं; धर्म-सभायें गठित की जाती हैं; चलते-फिरते औषधालयों तथा शिविर-समारोहों का संचालन किया जाता है; देश भर की कला-कारीगिरी के नमूनों का प्रदर्शन किया जाता है और साधु-सन्यासियों के प्रवचनों से अन्तर-बाहर को पवित्र बनाने का पुण्य प्रयत्न किया जाता है । सच बात तो यह है कि तीर्थ-केंद्रों में भारतवासियों के सांस्कृतिक विकास की कहानी छिपी हुई है । अनादि काल से वे राष्ट्रीय आत्मा का ताना-बाना बुनते चले आ रहे हैं । हमारे सामूहिक विकास के भाग्यविधाता बन कर वे लोकजीवन पर छाये हैं । हमारी आध्यात्मिक आकांक्षाओं के वे सर्वोत्तम प्रतिनिधि है । प्रेम और करूणा की वे गंगोत्री है । नरोत्थान के वे गंगा सागर हैं एवं सर्वसंग्राहक समन्वयशील दृष्टिबोध के आध्यात्मिक आदर्श हैं ।

७. भद्रावती तीर्थक्षेत्र :

भारतीय परम्परा की धारा में श्रमण जैन संस्कृति के अन्तर्गत भद्रावती एक ऐसा ही पुण्य तीर्थक्षेत्र है । भारत के स्वप्नदेव तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की अनोखी कहानी से यह सम्बद्ध है । तीर्थक्षेत्र की अतिशय मनोहारी गाथा पढ़ कर पाठक स्वयं अनुभव कर सकेंगे कि भद्रावती निश्चय ही श्रमण विचारधारा के समन्वय का केंद्र स्थल है । जैनियों की सांस्कृतिक गंगा पर अवस्थित संगम-तीर्थ है । मानव-मन सूक्ष्मतम, सुकुमारतम और सुंदरतम अनुभूति उत्पन्न करने के लिये आदर्श संस्कारों का आधार है । त्याग और तपस्या का यह पवित्र तपोवन है । धार्मिक-सांस्कृतिक शिक्षण का यह विद्यापीठ है । धर्मविस्तार का यह विकीरण केंद्र है । तीर्थस्थान की प्रत्येक ईंट और पत्थर में जैनधर्म, जैन दर्शन और जैन कला की पच्चीकारी की हुई है और भारतीय कला तथा स्थापत्य के विकास में इसने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । स्थानीय सामाजिक-आर्थिक जीवन को प्रभावित करने में यह समर्थ है । मेलों-त्यौहारों के माध्यम से जनजीवन को मुखरित करने की सामर्थ्य इस तीर्थ में विद्यमान है । शुचिता का इसे आदर्श कला कहा जा सकता है । सामाजिक एकता और राष्ट्रीय आत्मा की दृढ़ता को यह प्रोत्साहन देता है । तीर्थ दर्शन से आध्यात्मिक अनुभूति सहज ही उपलब्ध होती है और संस्कार सुसंस्कृत बनते हैं । लोकाचार के वर्धन का तीर्थ प्रेरणा-श्रोत है । सामाजिक संगठन और प्रगति के संकेत-चिन्ह इसमे मौजूद हैं । यहां दानशीलता और त्यागवृत्ति को स्वयंमेव प्रोत्साहन मिलता है । सामाजिक सदाचार, वैयक्तिक विवेक-विचार तथा सहिष्णु सदाशयता पर यहां की व्यवस्था आधारित है । देव, शास्त्र और गुरु की सम्मिलित पूजा-अर्चना का यह पदार्थपाठ पढाता है । अंत में, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के रत्नमयी योग के समुच्चय से यह ओतप्रोत है ।

८. आभार :

प्रस्तुत पुस्तिका का लेखन-कार्य ऐतिहासिक दृष्टि से भाई रतनलालजी बाजोरिया ने परिश्रमपूर्वक किया है । वे धन्यवाद के पात्र हैं । श्री जैन श्वेताम्बर मण्डल भद्रावती के अध्यक्ष श्री चेनकरणजी फत्तेपुरिया, वर्धा तथा मंत्री श्री राजकरणजी गोलछा, चंद्रपुर, भद्रावती तीर्थक्षेत्र के प्राण हैं एवं उनके मार्गदर्शन में क्षेत्र दिनोंदिन प्रगति कर रहा है । उनके प्रयत्न सराहनीय है । साधुवाद !

भगवान महावीर २५ वीं निर्वाण शताब्दी
महावीर जयंती १९७५

रतनकुमार जैन
७६, शंकरनगर, नागपुर.

* अनुक्रमणिका *

		पृष्ठ
१)	स्थान एवं मार्ग निर्देश	१
२)	भव्य मनोरम अतीत	२
३)	स्वप्न संकेत	४
४)	प्रतिमा की प्राप्ति व प्रतिष्ठा	६
५)	भारत के स्वप्नदेव	१०
६)	प्राचीन अवशेष	१२
७)	वर्तमान तीर्थ भद्रावती	१६
८)	तीर्थ की प्रतिष्ठा कैसे बढाएँ !	२१
९)	दर्शकों की नजर से	२४
१०)	श्री जैन श्वेतांबर मण्डल	२८
११)	महान तपस्वी योगीमुनी श्री १०८ मोतीलालजी महाराज	३५
१२)	मेरी भावना	३८

॥ नवकार महामंत्र ॥

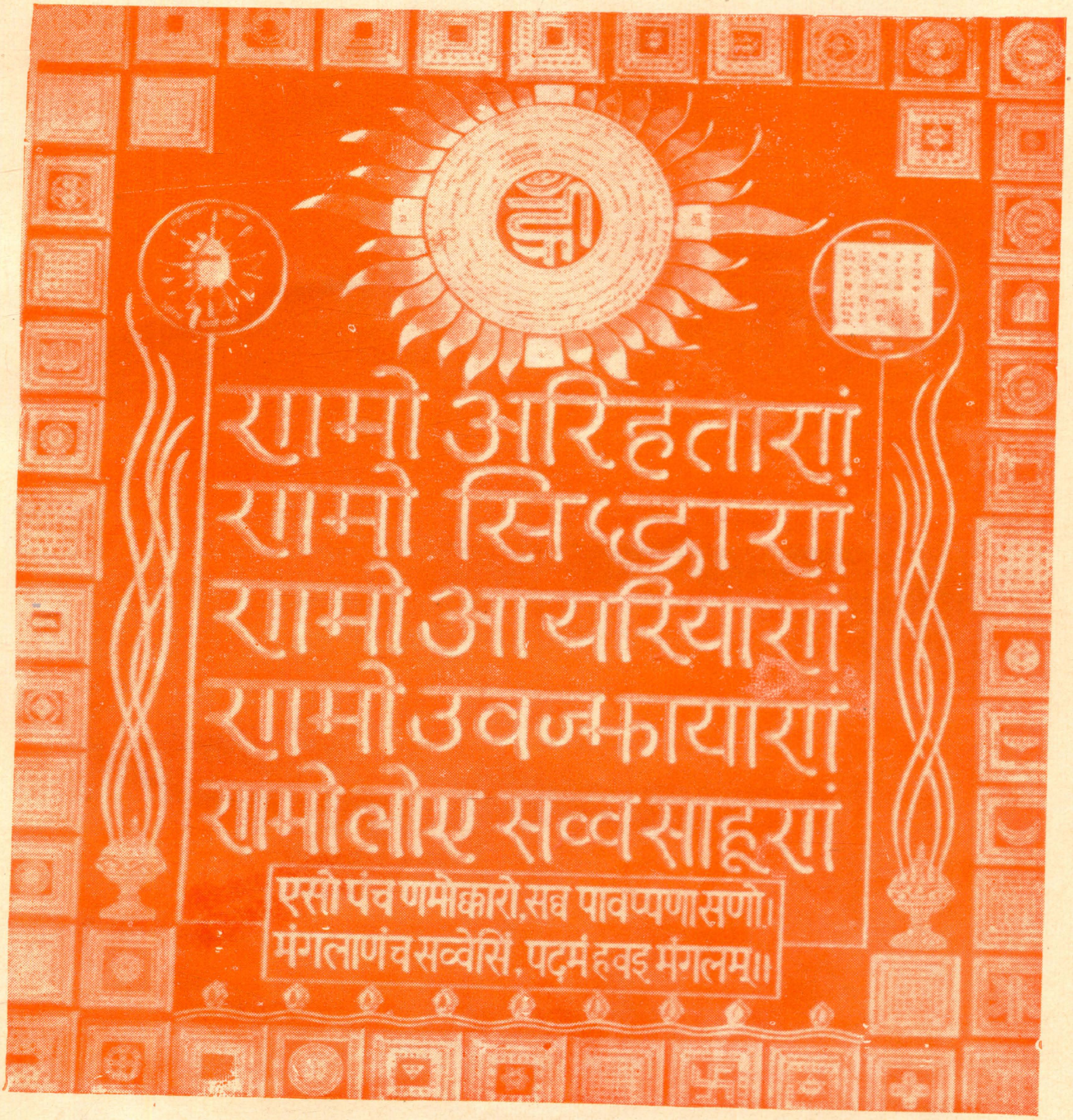
णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलम्॥

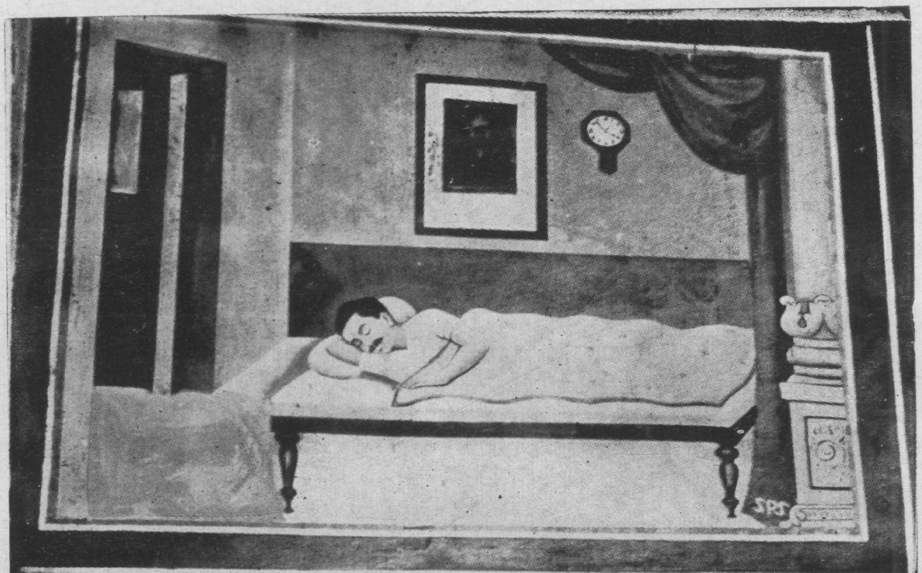

श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ के मुनिम
श्री चतर भुज भाई पुंज़ा भाई को संवत् १९६६
वैशाख सुद ५ सोमवार रात को स्वप्न आया के -

वे स्वयं भांदक के जङ्गल में फिरते हैं और
उनके पिछे पिछे एक दस हाथ लम्बा काला-
नाग आरहा हैं!

जब वे थक जाते है, तब वे कहते हैं, कि हे नागदेव मैंने आपका क्या अपराध किया, तब नागदेव कहते हैं कि तु पाँचसो रुपीये खर्च करो/ में तुम्हें एक चमत्कार बतलाऊँ, तब वो कहते हैं, मैं गरीब हुं पाँचसो रुपीये कहाँ से लावुं

तब नागदेव कहते हैं, अच्छा खर्च नहीं कर सकता तो तु तेरे पिछे देख, जब वे पिछे देखते है, तब नागदेव कहते हैं कियह एक सुन्दर भद्रावती नगरी और महाप्रभावी श्री केशरिया पार्श्वनाथ प्रभुका महान तीर्थ क्षेत्र था-

लेकिन समय के परिवर्तन से विच्छेद होगया है सो इस तीर्थ का पुनरोद्धार करने का तू प्रयत्न कर! यह कह कर नागदेव अदृष्य-होगये. और वे प्रभुके सन्मुख वंदन स्तुती करने लग गये.

स्वप्न के अनुसार उसी जगह पर
वर्तमान श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ, भद्रावती

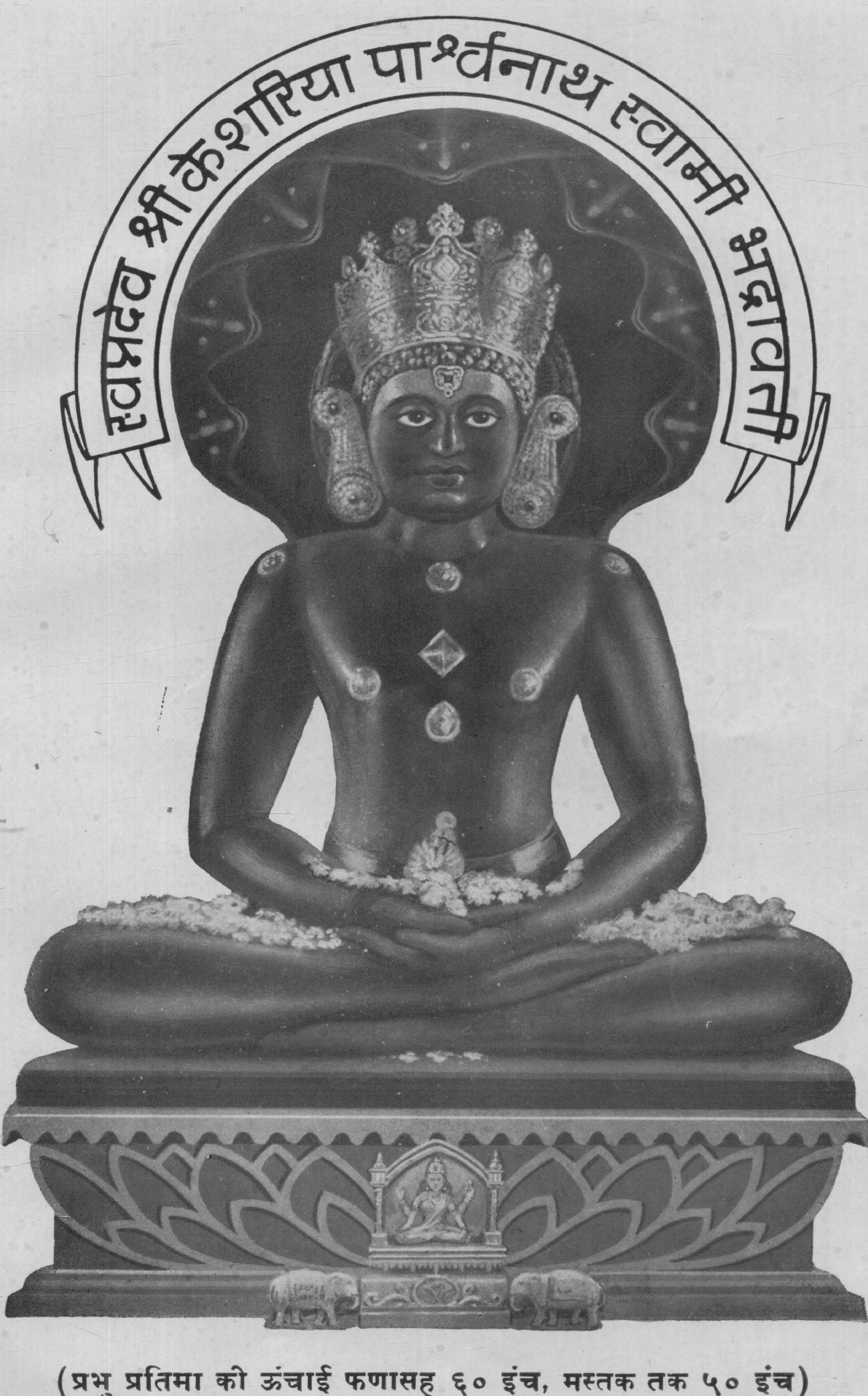

(प्रभु प्रतिमा की ऊंचाई फणासह ६० इंच, मस्तक तक ५० इंच)

Shree Printing Press, Nagpur-2.

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्सगहरोगमारी दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥

तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरंठाणं ॥ ४ ॥

इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवेभवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

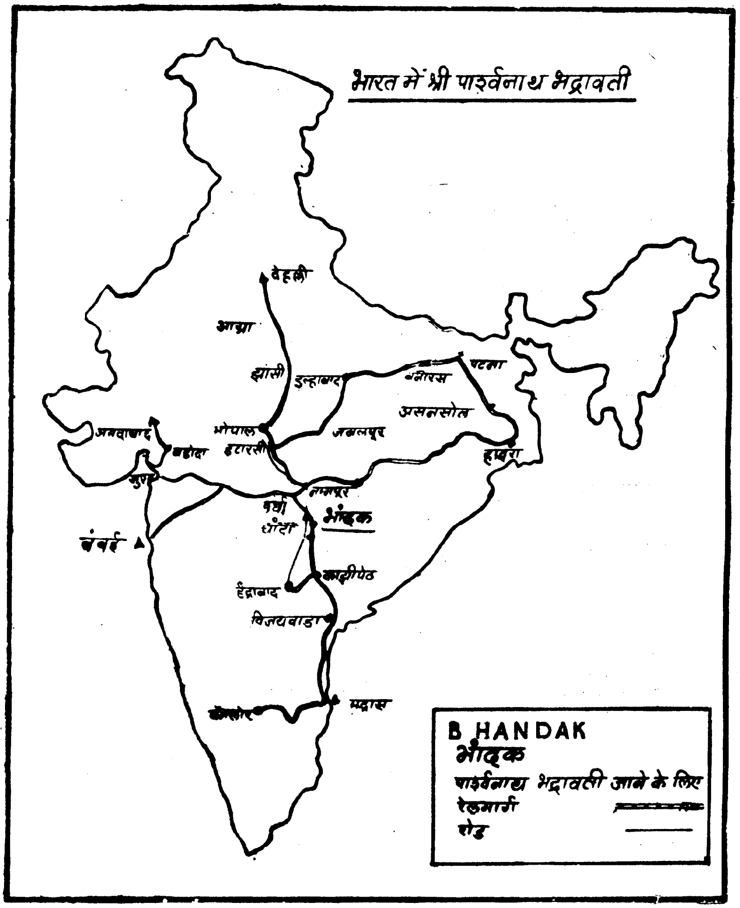

भारत में श्री पार्श्वनाथ भद्रावती

ॐ

जैन तीर्थ भद्रावती

स्थान एवं मार्ग निर्देश

पचास–साठ साल पहले जो सिर्फ एक अनामसा भांदक स्टेशन था, वह आज भारतभर में प्रसिद्ध पवित्र जैन तीर्थ भद्रावती के रूप में विख्यात हो चुका है और समय की परतों को चीरकर उसका प्रकाश अधिकाधिक फैलता आ रहा है। दिल्ली से मद्रास जानेवाली रेल्वे के ग्रँड ट्रंक रेल मार्गपर वर्धा के आगे तथा चंद्रपुर के कुछ मील पहले जो भांदक नामक रेल्वे स्टेशन आता है, वही आज का भद्रावती है। दिल्ली से काजीपेठ–मद्रास जानेवाली तथा वर्धा से बल्लारशाह जानेवाली रेल गाडियाँ इस स्टेशन से गुजरती है। वर्तमान महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ विभाग में चंद्रपुर जिले मे भद्रावतीका समावेश होता है। भद्रावती चंद्रपुर (चांदा) से १६ मील, वर्धा से ६५ मील, नागपुर से ८० मील, वणी से २६ मील और हैदराबाद से करीब २५० मील है।

भांदक स्टेशन के बोर्डपर भांदक के नीचे ही "भद्रावती पार्श्वनाथ" का उल्लेख किया गया है। महाराष्ट्र राज्य परिवहन (स्टेट ट्रान्सपोर्ट) की बसें दिन मे कई बार वहाँ पहुंचती है। स्टेशन से मंदिर की दूरी १ मील है, परन्तु बस स्टैण्ड के तो वह पास ही है। संघ की ओर से रेल्वे स्टेशन पर हर गाडी पर यात्रियों को मंदिर ले जाने के लिये रिक्षा, बैलगाडी आदि वाहन रखे जाते है।

•••

२

भव्य मनोरम अतीत

भद्रावती में पुराने तालाबों, बावडियों तथा कुओं की संख्या लगभग १०० है । कई खंडहर, कई मूर्तियाँ, कई शिल्प यत्रतत्र बिखरे हुए आज भी दृष्टीगोचर होते है । स्वयं भगवान पार्श्वनाथ की जो प्रतिमा मंदिर में प्रतिष्ठापित है, कहते है वह २३००–२४०० साल पूर्व की है । भद्रावती में प्रतिष्ठापित पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ति का २३००–२४०० साल पुरानी होने का अर्थ है, भद्रावती को जैन युग के अत्यन्त प्रारंभिक काल में तीर्थ स्थान के रुप में माना जाने लगा था अथवा इस स्थान में रहकर जैन साधक, भक्त साधना एवं तपश्चर्या किया करते थे । भद्रावती के आसपास जो और मूर्तियाँ मिली है, एवं वहाँ जो तालाब, बावडियाँ और कुअे है, उनसे सिद्ध होता है कि भद्रावती प्राचीन काल में एक सुन्दर संस्कृति का नागर-केन्द्र था ।

महाभारत एवं जैमिनी कथासार में एक भद्रावती का उल्लेख आया है । उस भद्रावती के राजा युवनाश्व के पास श्यामकर्ण अश्व था । धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय (या अश्वमेध) यज्ञ में अश्वमेध के लिए श्यामकर्ण अश्व की आवश्यकता थी । तब भी अपने सहचरों-मेघवर्ण तथा कृष्णकेतुके साथ भद्रावती आये थे और राजा के न माननेपर युद्ध मे उसे हराकर श्यामकर्ण को ले गये थे । बहुत संभव है कि भद्रावती, आजका भांदक ही हो ।

ऐतिहासिक युग में कलिंग देश के जैन सम्राट खारवेल का नाम आता है । सम्राट खारवेल की रानी भद्रावती की राजकन्या थी । कुछ इतिहासकारों की यह भी मान्यता है कि मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त, कौटिल्य (प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य) के चले जाने के बाद जैन धर्म के प्रभाव में आ गये थे । सम्राट चंद्रगुप्त के साथ एक बार जैन आचार्य भद्रबाहु स्वामी दक्षिण में पधारे और वर्तमान भद्रावती के शांत मनोरम परिसर को देखकर यहां की गुफाओं मे रहकर उन्होने आत्म–साधन एवं तपश्चर्या करनी शुरू की ।

बुद्ध–धर्म के अनुयायी चीन के प्रसिद्ध साधक यात्री हचुयेनसुंग ने अपने प्रवास–वर्णन में भद्रावती एवं वहाँ के राजा का उल्लेख किया

है । वे लिखते है, "भद्रावती का राजा क्षत्रिय है, वह अत्यन्त विद्याप्रेमी, कलाप्रेमी एवं बडा धार्मिक है । वहाँ पर सैकडों बडे बडे मठ है, एक एक मठ में हजारों ऋषि मुनि रहते है । यह नगरी सैकडों मंदिरों एवं विद्यालयों से सुशोभित है । यहाँ काफी संख्या में विद्यार्जन करनेवाले स्नातक वास करते है ।

भद्रावती एवं उसके आसपास के प्रदेश पर मौर्य, गुप्त, आन्ध्र, राष्ट्रकूट, चालुक्य और वाकाटक वंशों का आधिपत्य रहा । काफी बाद मे उस पर कई दिनों तक चांदा के गोंड राजाओं ने राज्य किया, बाद में उस पर नागपूर के भोसलों की भी अधिसत्ता थी । एक छोटी लडाई में अंग्रेजों ने भोसलों से यह प्रदेश सन् १८१८ मे छीन लिया था । परन्तु भद्रावती का प्राचीन वैभव इससे कई सदियों पहले लुप्त हो गया था । जो कभी विद्या और संस्कृति का केन्द्र था, वह श्री–हीन होकर विस्मृति की गोद में सो गया । वैभव खंडहरों में बदल गया, शिल्प एवं वास्तु अस्त–व्यस्त होकर टूट–फूट गये । समय के प्रवाह में भद्रावती अंग्रेजी राज में भांदक नामक एक छोटासा उजडासा स्टेशन भर रह गया । और वहाँ गांव के नाम पर थे चंद झोपडे । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मंडल के प्रयासों के फल स्वरूप महाराष्ट्र शासन ने इसे पुनश्च "भद्रावती" नामसे प्रतिष्ठित किया ।

साधक और अपरिग्रह !

संग्रह करने की वृत्ति होना वा थोडासा भी संग्रह करना, यह अन्दर रहनेवाले लोभ की झलक है । अत एव मैं मानता हूँ कि जो साधक मर्यादा-विरुद्ध कुछ भी संग्रह करना चाहता है, वह गृहस्थ है– साधक नहीं है ।

साधक और जीविका की प्राप्ति !

जिस प्रकार भँवरा वृक्षों के पुष्पों से रस पाकर–रस का पान कर–अपने आप को तृप्त करता है और वह इस प्रकार पुष्पों का रस पीता है जिससे पुष्पों को भी कमसे कम वा नहीवत् तकलीफ होती है । इसी प्रकार जीविका का अर्थी कोई भी सन्यासी वा गृहस्थ जगत मे बसने वाले अपने सहकारियों से अपनी स्वार्थ साधना करे जिससे उन सहकारियों को कम से कम वा नहींवत् तकलीफ हो ।

३

स्वप्न संकेत

भद्रावती के पुनरुत्थान की कहानी एक अद्भुत स्वप्न से जुडी हुई है। आकोला के पास सिरपूर में "श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ" का मंदिर है। श्री चतुर्भुज भाई उस मंदिर–संस्था के व्यवस्थापक थे। विक्रम संवत १९६६ की माघ शुक्ल ५ सोमवार की रात को उन्हे जो स्वप्न आया, उसका वर्णन "प्रगट प्रभावी पार्श्वनाथ" नामक किताब में अहमदाबाद के श्री मोहनलालजी झवेरी ने निम्नानुसार किया है :–

"श्री चतुर्भुज भाई जंगल में घूम रहे है। इतने में उनके पीछे एक दस हाथ लम्बा काला नाग चल पडा। चतुर्भुजजी जहाँ जहाँ जाते है, वहाँ वहाँ नाग भी उनके पीछे पीछे जाता है। आखिर वे घूमते घूमते थक गये, परन्तु नागराज ने उनका पीछा नही छोडा। तब उन्होने नाग से बिनती की, "हे नागराज, मैने तुम्हारा कोई अपराध तो किया नही, फिर आप मेरे पीछे क्यों पडे है ?" "मै तुझे कुछ चमत्कार बताऊं, तू पांच सौ रुपये खर्च कर" नाग ने मनुष्य की बोली में कहा।

"आप कहते तो ठीक है, लेकिन मै तो कंगाल हालत में हूं, चाकरी करके उदर पोषण करता हूं, पांच सौ रुपये कहाँ से लाऊं ?"– उसने जवाब दिया। "क्या तू इतने रुपये खर्च नही कर सकता ?" नाग ने पूछा।

"मै सच कहता हूँ, अभी मेरे पास कुछ नही है" उसने कहा। "अच्छा तो तेरे पीछे देख" नागराज ने कहा। चतुर्भुज भाई नाग की इस बात को सुनकर मन मे बहुत घबराये की यदि मैंने नजर पीछे घुमाकर देखा तो नाग मुझे डस लेगा। फिर भी उन्होने डरते डरते अंत में जब पीछे देखा तो आश्चर्य, जहाँ वे खडे थे, वहाँ जंगल नही था, एक बडा नगर था। उन्हे सामने पश्चिम मुखी मंदिर में श्री पार्श्वनाथ प्रभु की पीले रंग की प्रतिमा दिखाई दी। तुरंत वह भगवान की स्तुति करने लगे।

नागराज ने उस बीच में कहा – "देख, यह भद्रावती नगरी और केसरिया पार्श्वनाथजी का बडा तीर्थ है जो अभी विच्छेद हुआ है। इस तीर्थ का उद्धार करने का तू प्रयत्न कर"।

नागराज के अदृश्य होते ही उनकी आंखें खुल गई।

स्वप्नदेव से साक्षात्कार

उपर्युक्त स्वप्न के बाद स्वाभाविक ही श्री चतुर्भुजभाई के मन में सपने की जांच

पडताल की बात जोर करने लगी । वे चार दिन बाद याने माघ सुदी ९ को आकोला से रवाना हुये और भांदक पहुंचे । वहाँ उन्हे बताया गया कि प्राचीन भद्रावती ही भांदक है । तब वे आसपास की झाडियों में स्वप्न–प्रतिमा को ढूंढने लगे । ढूंढते ढूंढते उन्हे स्वप्न में दिखी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के दर्शन हुये । प्रतिमा जैसी सपने में देखी थी वैसीही थी । फर्क इतना ही था कि जहाँ सपने में प्रतिमा मंदिर में स्थापित दिखी थी, तो यहाँ वह प्रत्यक्ष में जमीन में आधी गडी किंचित टिकी सी दिखाई दे रही थी और उसके चारों और आर्कियालॉजीकल डिपार्टमेन्ट का घेरा था और उस पर "संरक्षित पुराणचिन्ह" का बोर्ड लगा था । चतुर्भुजभाई के पहले चांदा के चर्च के एक विद्याव्यसनी पादरी को वह मूर्ति घूमते घूमते दिखाई दी थी और उन्ही की सूचना पर ब्रिटिश सरकार के आर्कियालॉजिकल डिपार्टमेन्ट ने उसे अपने संरक्षण में ले लिया था ।

जब चतुर्भुजभाई ने अपने स्वप्न की प्रतिमा को साक्षात देखा तो वे भाव विभोर हो गये । प्रतिमा छः फूट ऊंची, नागके सप्तफणों से रक्षित, अर्धपद्मासनस्थ थी । उसका रंग केसरिया था ।

卐

अ प्र मा द !

जैहे वृक्ष का पत्ता पतझड ऋतुकालिक रात्रि-समूह के बीत जाने के बाद पीला हो कर गिर जाता है, वैसे ही मनुष्यों का जीवन भी आयु के समाप्त होने पर सहसा नष्ट हो जाता है । इस लिए हे गौतम ! क्षण मात्र भी प्रमाद न कर ।

卐 卐 卐

४

प्रतिमा की प्राप्ति व प्रतिष्ठा

स्वप्न में दिखी श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा को खोज लेने के बाद श्री चतुर्भुजभाई चांदा आये और वहांके श्री संघ को अपने स्वप्न एवं खोज का वृत्तान्त निवेदित किया । तब, चांदा में श्री मुनि सुमतिसागरजी महाराज विराजते थे । सारा वृत्तान्त सुनकर चांदा का श्री संघ और मुनि सुमतिसागरजी भांदक आये । श्री मुनिमहाराज ने प्रतिमाजी को देखकर तथा अन्य चीजों का निरीक्षण कर आदेश दिया कि यह प्रतिमा तेवीसवे तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी की है और यह स्थान प्राचीन तीर्थक्षेत्र भद्रावती है, इसलिए जीर्णोद्धार का कार्य शुरु करवा कर इस तीर्थ एवं प्रतिमा को पुनर्स्थापित सुप्रतिष्ठित किया जाय ।

तद्नुसार स्वर्गीय श्री सिद्धकरणजी गोलेच्छा अध्यक्ष जैन श्वेतांबर सभा चांदा निवासीने चांदा जिल्हे के डिप्टी कमिश्नर के माध्यम से इस दिशा में प्रयत्न शुरु कर दिये । परिणामस्वरुप १–४–१९१२ को स्व. श्री सिद्धकरणजी और सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया के बीच एक करारनामा सम्पन्न हुआ जिसके जरिये सरकारने प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा एवं जिस भग्न पुरातन मंदिर में वह पाई गई वह मंदिर की मालकियत और कबजा स्व. श्री सिद्धकरणजी अध्यक्ष जैन श्वेतांबर सभा के नाम हस्तांतरित किया ।

और १–४–१९१२ को ही एक अन्य करारनामे के जरिये सरकारने रयतवारी गांव मौजा घुटकाला तहसिल वरोरा जिल्हा चांदा के सर्वे नंबर १ में की २१.५० एकड जमीन मंदिर एवं परिसर के निर्माण हेतु नाममात्र महसूल पर दी । और इसी जगह पर प्रभु पार्श्वनाथ का मुख्य जिन मंदिर आज विद्यमान है ।

मंदिर निर्माण के साथ ही आनेवाले यात्रियों के लिये धर्मशालाएँ अन्य मंदिर आदि का भी निर्माण करना था । उपरोक्त जमीन से लगकरहि तत्कालिन मालगुजारी गांव भांदक की सरहद लगी हुई है । अतएव तत्कालिन जैन श्वेतांबर सभा के सेक्रेटरी स्व. श्री हिरालालजी फत्तेपुरिया ने तत्कालिन मालगुजार से १९१२ में एक रजिस्टर्ड बक्षिसपत्र द्वारा २०० फूट लंबी पूर्व पश्चिम और १०० फूट चौडी उत्तर दक्षिण जमीन प्राप्त की ।

१९१३ को फिर एक बक्षिस पत्र द्वारा उन्ही मालगुजारों ने १९१२ मे दी हुई जमीन से लगकर आगे की पूर्व पश्चिम लंबी २०१ फूट

श्री जैन श्वेतांबर मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष
चांदा निवासी
स्व. सेठ श्री सिद्धकरणजी गोलेच्छा

श्री जैन श्वेतांबर मण्डल के संस्थापक महामंत्री
वर्धानिवासी स्व. सेठ श्री. हीरालालजी फत्तेपुरिया,
जिनके अथग परिश्रम, भक्ति, कर्तव्यनिष्ठा
और सेवापरायणता का मूर्तस्वरुप है,
आजका तीर्थ भद्रावती !

और उत्तर दक्षिण चौडी ४०१ फूट जमीन और दी ।

१९१४ को अन्तिम रजिस्टर्ड बक्षिसपत्र द्वारा उन्ही मालगुजारोंने सेक्रे. श्री हिरालालजी की प्रार्थनापर फिर १९१३ मे दी गई जमीन के आगे पूर्व पश्चिम लंबी १९१ फूट और उत्तर दक्षिण चौडी ४०० फूट जमीन दी ।

इन तीनों बक्षिस पत्रों द्वारा दी गई जमीन १९०२ के सेटलमेंट नक्शे में खसरा नंबर ५००/१ में दिखाई गई है । १९१८–१९ में पुनश्च सेटलमेंट हुआ और रिनंबरिंग पर्चे के मुताबिक मंदिर के कब्जे में उस वक्त ४९६/३ और ४९७ और इन दोनो नंबरों की कुल आराजी करीबन ६.५० एकड है ।

आज जितनी भी धर्मशालाएँ, बावडियाँ, फुलबाग, श्री ऋषभदेव मंदिर, श्री दादागुरुदेव मंदिर, श्री मोतीलालजी महाराज का मंदिर, भोजनशाला, पेढी, दप्तर, परकोटे के बाहर की धर्मशाला, औषधालय, सामने का बंगला, पश्चिम से प्रथम प्रवेश द्वार के पास की कर्मचारियों की खोलीयाँ, गोशाला आदि, और इस क्षेत्र में की सारी खुली जमीन है वह सब "मण्डल" के मालकियत की है ।

जैसे जैसे उपर मुजब जमीन प्राप्त होते गई वैसे वैसे मंदिर, उपाश्रय, धर्मशालाएँ आदिका निर्माण कार्य भी तेजीसे होने लगा । सारे देशसे दानवीर साधर्मी बन्धुओं ने मुक्त हस्तसे तीर्थ के पूर्ननिर्माण के लिये आर्थिक सरिता का प्रवाह बहा दिया ।

संवत १९७६ की फाल्गुन शुद्ध तृतिया यह शुभ दिन प्रतिष्ठा के लिये निश्चित किया गया । प्रतिष्ठा के आठ दिन पूर्व से मूलनायकजी को वेदोपर विराजमान करनेके लिये घी की बोली शुरु कर दी गई थी । प्रतिष्ठा के ४ दिन पूर्व इतनी विशाल मूर्ति कैसे उठाकर रखी जायगी, यह जानने के लिये १५–२० व्यक्तियों ने प्रतिमाजी को उठाकर देखने की कोशिष की । किन्तु प्रतिमा एक सूत भी नही हिली ।

यह देखकर उपस्थित लोगों मे निराशा की लहर दौड गई । महामंत्री श्री हीरालालजी फत्तेपुरिया, आचार्य श्री जयमुनीजी, आदि विशेष रुपसे चिन्तित थे । यदि प्रतिमाजी उठाकर रखी नही जा सकती, तो इतने परिश्रम और व्यय से निर्माण किये गये मंदिर का क्या उपयोग ?

काफी विचार विमर्श के वाद आचार्य जयमुनि, महामंत्री श्री हीरालालजी और पुजारीजीने तेले की (तीन उपवास) तपश्चर्या प्रारंभ की और प्रभु पार्श्वनाथ से अनुनय की, "हे प्रभो, हमे संकेत दीजिये, किस प्रकार आपको उठाकर नवनिर्मित वेदीपर विराजमान करें ?"

प्रभु ने तपस्वीयों की प्रार्थना मानो स्वीकार कर स्वप्न संकेत दिया की चार अविवाहित कुमारिकाएँ प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा को मूल स्थान से उठाकर नवनिर्मित वेदीपर विराजमान कर सकती है । संकेत पाकर पूज्य जयमुनिजी, स्व. श्री हीरालालजी फत्तेपुरीया और पुजारीजी हर्षित हो गये, और प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न कराने के तयारी में दिनदुगने उत्साह से जुट गये ।

"क्या चार कुमारिकाएँ इतनी विशाल और इतनी वजनदार प्रतिमाजी उठा सकेगी?" यही कुतुहल भरा प्रश्न जनसमुह के मन को उत्कंठित कर रहा था। सभी की दृष्टि कभी प्रभू के प्रतिमाजी की ओर, और कभी रिक्त नवनिर्मित वेदी की ओर खिच रही थी। और भी एक व्यक्ति थी जिसकी ओर साराही जनसमूह बडीही उत्सुकताभरी और आशा भरी दृष्टिसे निहार रहा था–"जय मुनि"।

आव्हानित चार कुमारिकाएँ मूल जिन प्रसाद में पहुंच गई, और जय मुनिजी द्वारा निर्दिष्ट स्थानपर प्रतिमाजी के आजू बाजू खडी हो गई। जय मुनीजी ने उन निर्मल मन की पवित्र बालिकाओं को कुछ सूचनाएँ दी और फिर प्रगट रुपसे प्रभु पार्श्वनाथ की स्तुति की।

ज्योंहि मुनीजी का आदेश हुआ, बंधुओं, एक चमत्कार हुआ, चारों बालिकाओंने प्रभु पार्श्वनाथ को ऐसे उठाकर वेदीपर विराजमान कर दिया, मानो वे प्रतिमा नही एक फोटो उठाकर रख रही हो। और असंख्य करतल ध्वनी, मंगलगान, मंत्रोच्चार, घंटनिनाद, और जयघोष के बीच शुभ बेला में प्रभु पार्श्वनाथ पुनर्प्रतिष्ठित किये गये।

भद्रावती संबंधी पूर्व पुस्तकों में इस चमत्कारिक घटना का उल्लेख न होनेसे पाठकों को शक होना स्वाभाविक है कि यह दन्तकथा कहांसे टपक पडी। औषधालय के सामने के बंगले के मालकियत के संबंध में जो विवाद चल रहा है, उसके सिलसिले में हम लोग छिंदवाडा स्वर्गीय श्री गुलाबचंदजी बैद, इन्कमटॅक्स अॅडव्हाइजर की गवाह लेने गये थे। हमारे साथ चांदा निवासी श्री ग्यानचंदजी कोठारी भी थे, और हमे उन के अन्य पारिवारिक लोगों के समक्ष ८१ वर्षीय महर्षि गुलाबचंदजी ने भद्रावती संबंधी जो अनेक संस्मरण सुनाये, उनमे सबसे प्रमुख यही था।

अतीत की घटनाओं को साशंक होकर देखना, आजके संदर्भ में जरा भी आश्चर्यजनक नहीं है। पर हाथ कंगन को आइने की क्या जरूरत? आज भी मूल जिनालय में प्रभु पार्श्वनाथ के सन्मुख जो अखंड घृतदीप सदैव प्रज्वलित रहता है, उसका काजल काला नही, बल्की केशरिया रंग का गिरता है, ये कोई भी अपनी निगाह से देख सकता है। और इसीलिये भद्रावती पार्श्वनाथ को केशरिया पार्श्वनाथ कहते है।

नवोदित तीर्थ की विधिवत प्रतिष्ठापना के बाद उस समय के कल्पक व योजक महामंत्री स्व. हीरालालजी फत्तेपुरीया तीर्थ के विकास हेतु फिर कार्यमग्न हो गये। इस भव्य तीर्थ के मंदिर के अनुरुप इस तीर्थ का परिसर भी नयनरम्य, मनमोहक और शांतिदायक हो इस उद्देश से उन्होने तत्कालीन अंग्रेज़ सरकारसे और अधिक जमीन के लिये अर्ज किया। फलत: २८–११–१९२० को एक करारनामे के जरिये सरकारने इस तीर्थ को मौजा घुटकाले की सर्व्हे नंबर ११:३ (पुराना ७:१) में की २४ एकड जमीन मय एक पुराने कुंवे के बाग बगीचे तत्काल लगाने के शर्तसे दी।

२२ जुलाई १९२१ को सोसायटीज रजिस्ट्रेशन अॅक्ट १८६० के अन्तर्गत "श्री जैन श्वेतांबर मण्डल" भांदक नामक संस्था इस तीर्थ के संचालन हेतु रजिस्टर की गई। एक लिखित विधान बनाया गया, जो ६ जुलाई १९५८ को संशोधित किया गया। संशोधित विधान के अनुरुप ही मंडलद्वारा इस तीर्थ का संचालन किया जा रहा है।

बडे मजे की बात यह है कि पार्श्वनाथजी की जो प्रतिमा आज भद्रावती मंदिर में प्रतिष्ठित है तथा जिसकी वजह से छोटासा भांदक भारतभर में प्रसिद्ध तीर्थ भद्रावती में परिणित हो गया है, उस प्रतिमा को पहले पाया एक ईसाई धर्म गुरुने और आज जो उस जंगल में साक्षात मंगल दृश्य दिखाई देता है। उसका भी बहुत कुछ श्रेय एक ईसाई राज्याधिकारी विदेशी महानुभाव सर फ्रेंक स्लाय को ही है। इतना ही नही, जिस सरकार का धर्म भारतीय धर्मो मे से जैन, बुद्ध, हिन्दु कोई भी नही था, जो सरकार ईसाईयत को राजधर्म मानती थी और संपूर्ण रूप से विदेशी थी, उसीके कार्यकाल में तथा सहयोग से इस तीर्थ की पुनर्स्थापना एवं पुनर्प्रतिष्ठा संभव हुई, यह दैवयोग है या चमत्कार ?

अ प्र मा द !

जैसे ओस की बूँद कुशा की नोक पर थोडी देर तक ही ठहरी रहती है, उसी तरह मनुष्यों का जीवन भी बहुत अल्प है-शीघ्र ही नाश हो जानेवाला है। इस लिए हे गौतम ! क्षण मात्र भी प्रमाद न कर।

अ प्र मा द !

अनेक प्रकार के विघ्नों से युक्त अत्यंत अल्प आयुवाले इस मानव-जीवन मे पूर्व संचित कर्मों की धूल को पूरी तरह झटक दे। इस लिए हे गौतम ! क्षण मात्र भी प्रमाद न कर।

भारत के स्वप्नदेव

स्व. श्री हीरालालजी फत्तेपुरिया तथा स्व. श्री सिद्धकरणजी गोलेच्छा के भगीरथ प्रयत्नों से भद्रावती तीर्थ का पुर्ननिर्माण संवत १९६९ में शुरू हुआ। यह घटना इतनी रोमांचकारी एवं अभिनव थी कि उससे अभिभूत होकर एक चांदा के विदेशी व विधर्मी पुलिस अधिक्षक श्री मिडलटन स्टुअर्ट की कलमने ६ जुलाई १९२४ के टाइम्स ऑफ इंडिया में भावविभोर होकर लिखा–

DREAM GOD OF INDIA

— By C. Middleton Steuwart

Found by a Bishop of the church, and traced through a dream by the brother of a Marwari Cotton Broker, PARASNATH once again gazes inscrutably before him, whilst around him, and on the site of his ancient shrine, is arising a temple, towards the magnificence and adornment of which the wealth of the JAIN Community of India is being poured out with lavish hand.

For centuries he slept amidst the dust and ruins of forgotton fanes in ancient Bhadravati bowing before the edicts of Ashok, he surrendered to the call of the Gautama, and mother earth, who first bared her bosom for the old beliefs, mercifully took into her shrounded embrace the neglected image.

The God which thousands of years before had seen that fierce conflict of the Mahabharat heroes for the possession cf the Shyam Karna steed, to its doctrine of meekness, prepared for slumber, lulled by the distant chanting of monks in their rock hewn cells.

And PARASNATH biding his time, slept.

Today, if those pious monks of Asoka's time, could revisit the scene, they would find the silence of desolation and the jungle where once their monasteries stood. They would find the blackness of a thousand nights concealing the seated Budha in the caves of Wijasan – his only attendants the bat.

Gone the great city of their day, gone the Sangharams and colleges of their learning. But the temple of Parasnath, ruined though it be, still stands. Parasnath despised, neglected and forgotton then, stirs in his sleep now, and from the hushed gloom of his ruined abode comes the clang of bell and the mystic murmer of the Sanskrit Mantras.

To this day, the jungle and open spaces under cultivation yields to the plough, interesting relies of a bygone civilization It was in some such fortuitions way that the head of the scottish Mission in chanda discovered the statue of Parasnath. It lay in a tangle of weeds half buried in the earth, but partially protected by the trampled down remains of an old temple. It was removed and placed in a shed and declared a protected Manument by Government.

The Times of India
Illustrated Weekly
July 6th 1924

भारत के स्वप्नदेव

चर्च के विशप द्वारा पाए गए और एक मारवाडी रुई के दलाल भाई द्वारा खोजे गये **'पारसनाथ'** फिर से एक बार अपने सामने निहारते है । उनकी पुरातन प्रतिमा के स्थान पर उनके चारों ओर एक मंदिर उठ रहा है और उसकी भव्यता एवं सजावट के लिये भारत के संपूर्ण जैन–संप्रदायका पैसा मुक्त हाथों से खर्च किया जा रहा है । सदियों तक वे (पार्श्वनाथ) पुरातन भद्रावती के खंडहरों में विस्मृत, धूल के बीच सोये हुए थे । अशोक के आदेशों के आगे सिर झुकाकर गौतम की पुकार पर वे एक तरफ हट गये थे और जिस धरती माता ने बुद्ध-पूर्व विश्वासों एवं मान्यताओं के लिए सर्वप्रथम अपना हृदय अनावृत किया था, उसी धरतीमाता ने कृपा पूर्वक इस विस्मृत प्रतिमा को अपनी गोद में छिपा लिया ।

भगवान पार्श्वनाथ ने हजारों साल पहले अपने नम्रता के दर्शन के मुकाबले में श्यामकर्ण अश्व पर अधिकार के लिये महाभारत कालिन खूंखार संघर्षों को देखा था और देखकर सुदूरवर्ती गिरी कंदराओं में स्थित साधुओं के स्तुतिगीतों के बीच सोने की तैयारी की थी । अपने समय का इंतजार करते हुए पारसनाथ सोते रहे ।

आज यदि अशोक युग के पवित्र साधु फिर से आये तो उन्हे उनके रवगुंजित विहारों की जगह वीरानगी की चुप्पी और जंगलों का सन्नाटा दिखाई देगा । वे पायेंगे कि विंझासन की गुफाओं में बैठे हुए बुद्ध को हजार रातोंकी कालिमा अपने आगोश में छिपाये हुये है और उनकी सेवामें है, सिर्फ चमगादड ।

उनके जमाने की वह भव्य नगरी लुप्त हो गयी, उनके विद्याके वे संघाराम और विद्यापीठ नष्ट हो गये, परन्तु पारसनाथ का मंदिर खंडहर स्थिति में ही क्यों न हो आज भी खडा है । तब के अवमानित दुर्लक्षित एवं विस्मृत पारसनाथ अब नींद में से कसमसाने लगे है और खंडहर बने उनके स्थान की वीरानगी से मधुर घंटानाद तथा संस्कृत मंत्रों की गूढ ध्वनियाँ उभरने लगी है ।

आज अभी तक यहाँ के जंगलों के नीचे की खुली जमीन एक बीती हुई सभ्यता के दिलचस्प चिन्हों को उद्घाटित करती रहती है । अैसी ही एक घटनामे चांदा के स्कॉटिश मिशन के प्रमुख ने पारसनाथ की प्रतिमा को पाया । वह प्रतिमा धरती में दबी, जंगली झंखाडो में उलझी अपने ही मंदिर के अवशेषों से आंशिक रुपेण सुरक्षित पडी हुई थी । वहाँ से उसे हटाकर एक शेड में रखा गया और सरकार द्वारा संरक्षित पुरातत्त्व स्मारक के रुप में विज्ञापित किया गया ।

●●●

६

प्राचीन अवशेष

१. श्रीआदिनाथ भगवान :

भद्रावती ही में निकली हुई ३ फीट ऊंची प्रथम तीर्थंकर श्रीआदिनाथ भगवान की मनोहर प्रतिमा थी। इस प्रतिमा का लेप करवाकर श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ सिरपुर अंजनशलाका के लिये भेजी थी। गतवर्ष ही इस प्रतिमाजी को भद्रावती वापिस लाया गया। कुछ खरोंच लग जानेसे उदयपूर के श्री हरीशंकर शर्मा द्वारा फिरसे लेप करवाया गया । और मंडल इस प्रतिमाजी को प्रतिष्ठित करने का विचार कर रहा था।

अक्टूबर ७४ के एक दिन सतना से एक पारखजी का फोन आया। "आदिनाथ भगवान, भद्रावती मे है, वहाँसे आप मूलनायकजी के रुप में यहाँ (सतना में) विराजमान करने के लिए लाये ऐसा स्वप्न संकेत मिला है", उन्होंने कहा और पूछा कि श्री आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा वहाँ है क्या ?

यहाँ प्रतिमाजी है, ऐसा मालूम होते ही वहाँ के संघ प्रमुख श्री चुन्नीलालभाई जीवराजजी पारख, एवं चार अन्य सज्जन यहाँ पधारे, उन्होने जो वृत्तान्त कहा उसका सार कुछ इस प्रकार है–

"सिकंदराबादसे सम्मेत शिखरजी का पदयात्रा संघ दो वर्ष पूर्व जब यहाँ आया था, तब हम लोग भी आचार्य महाराज और संघपतिजी से रास्ते में सतना पधारने की विनंती करने के लिये यहाँ आये थे। पूज्य आचार्य महाराज की अनिच्छा देखते हुए, हम लोगोंने आचार्य महाराज से अनुरोध किया की हमारी इच्छा सतना में एक जिनमंदिर बनवाने की है, यदि आप पधारें तो आपके ही करकमलों द्वारा शिलान्यास कराने का बिचार है"।

"पूज्य आचार्य महाराज से स्वीकृति मिलते ही हम प्रभु पार्श्वनाथ के सन्मुख गये और प्रार्थना की, हे प्रभो, सतना में जिनमंदिर बनाने की हमारी भावना है, कारण वहाँ, ६०–७० मील के एरिया में कोई जिनमंदिर नही है। और हम तो केवल ३०–३५ परिवार सतना में रहते है, तो हमारा मनोरथ और संकल्प पूरा करने मे हमारी सहायता करें"।

"सतना वापिस पहुँचते ही शहर के प्रमुख स्थान की रोड से लगी हुई जमीन हमे मिल गई। रातदिन हमारे नवयुवकों ने मेहनत कर उस जमीन पर के जुने मकानात आदि गिराकर जमीन बिल्कुल साफ कर दी, और पूर्वनियोजित

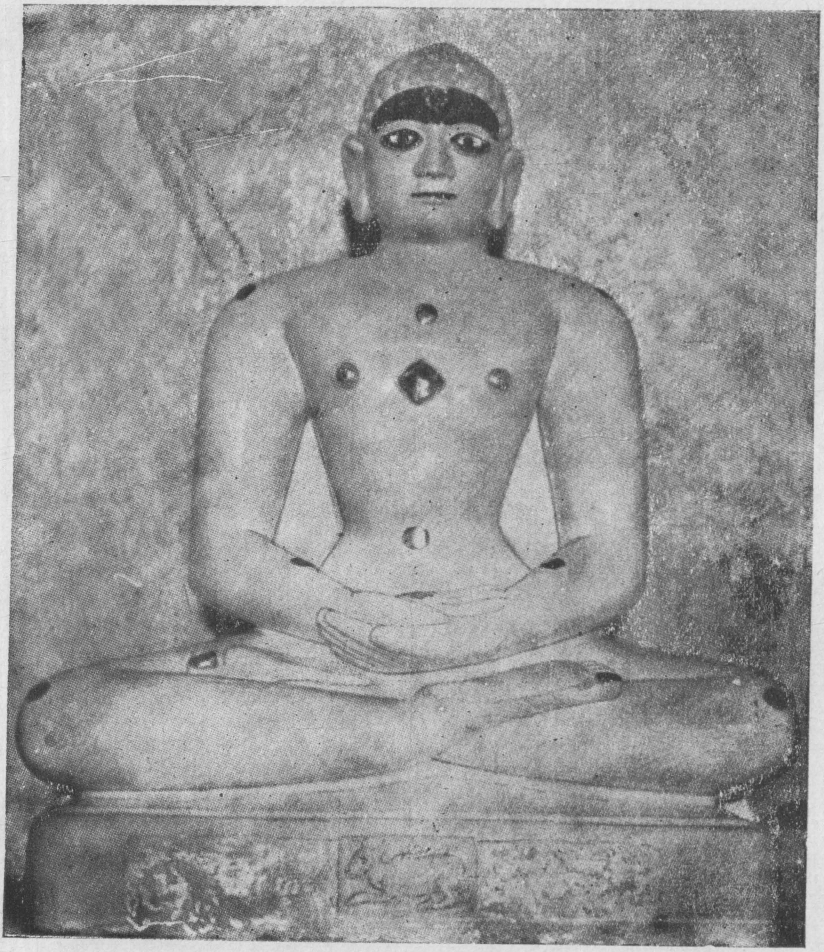

भद्रावती के प्राचीन आदिनाथ भगवान, जो सतना जिन मंदिर में मूलनायकजी के रूपमें विराजमान है.

प्रभु श्रीमहावीर !

अभी अभी खनन कार्य करते हुए दृष्टीगोचर हुए है

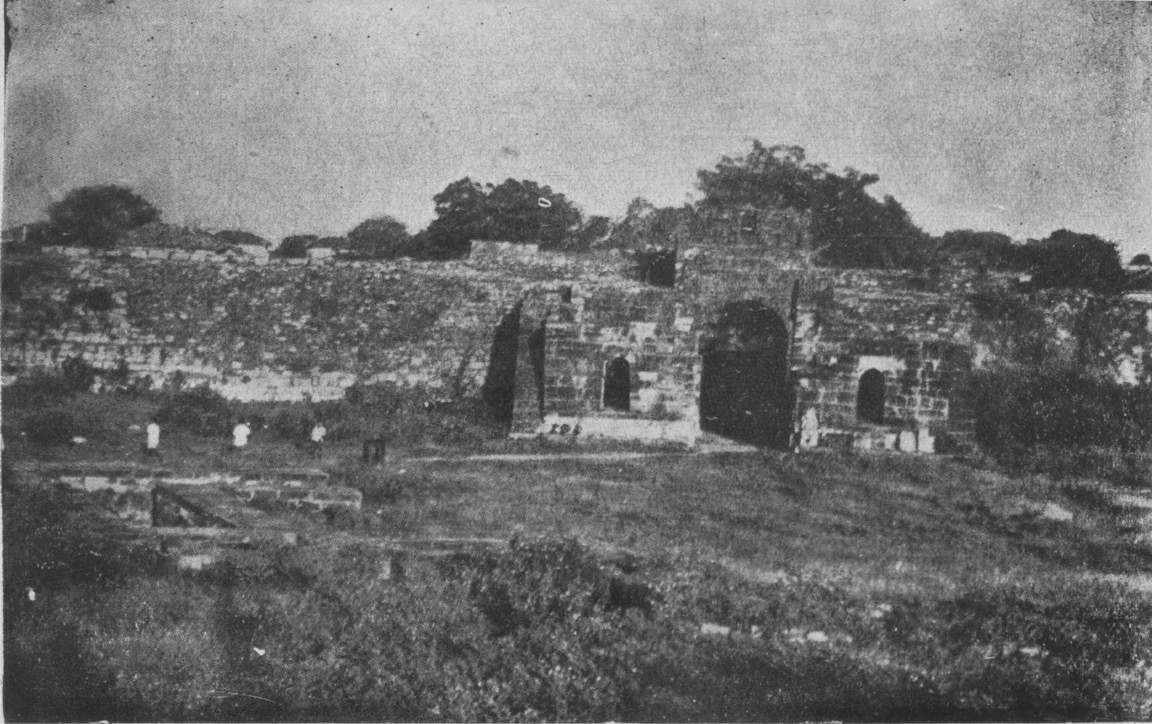

भद्रावती का प्राचीन किला

भद्रावती का प्राचीन भद्रनाग मंदीर

चंडिका देवी का प्राचीन मंदिर, भद्रावती

डोलारा तालाब एवं उसमें स्थित पाषाण का पुल

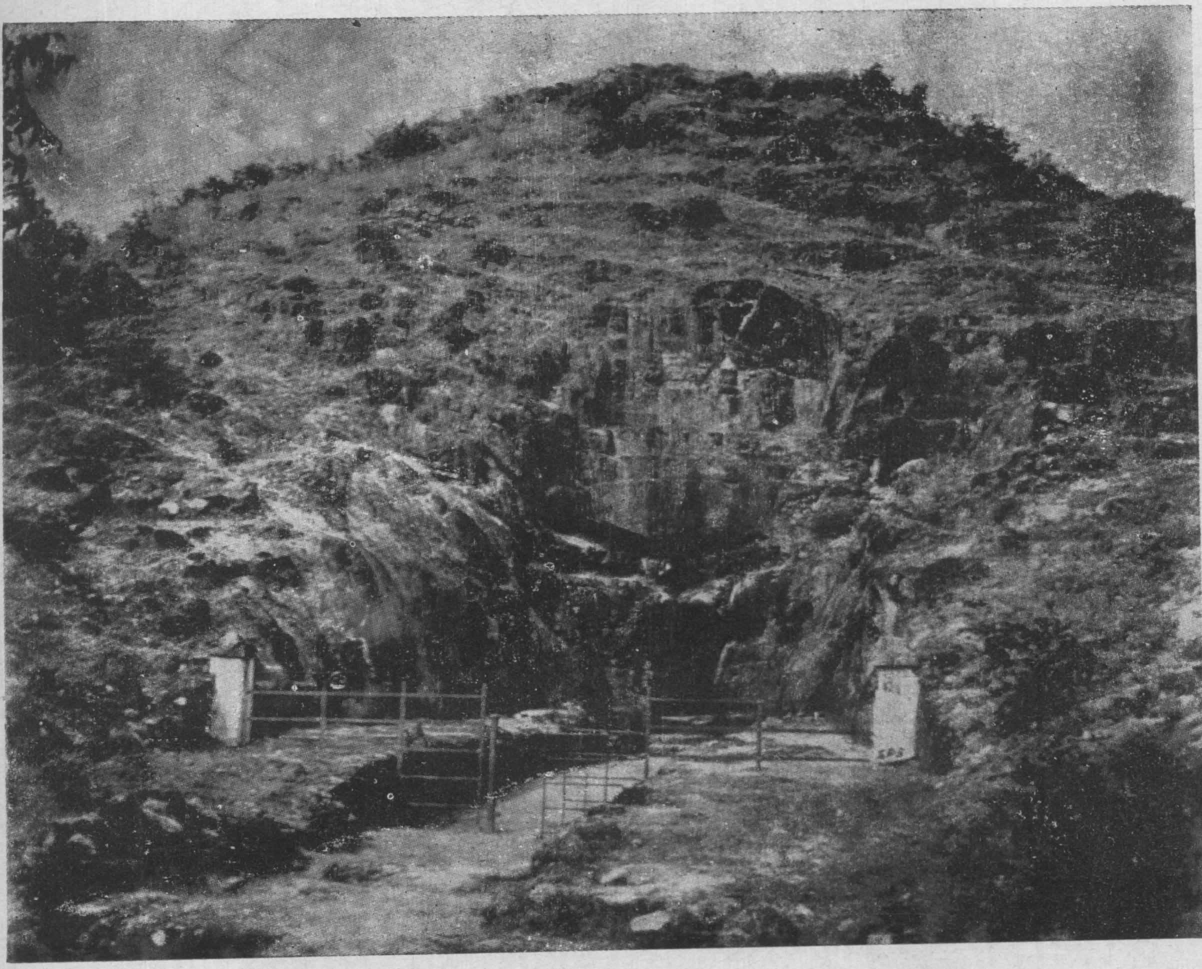

विंझासन की गुफा

स्व. मोतीलालजी महाराज का तपोधाम

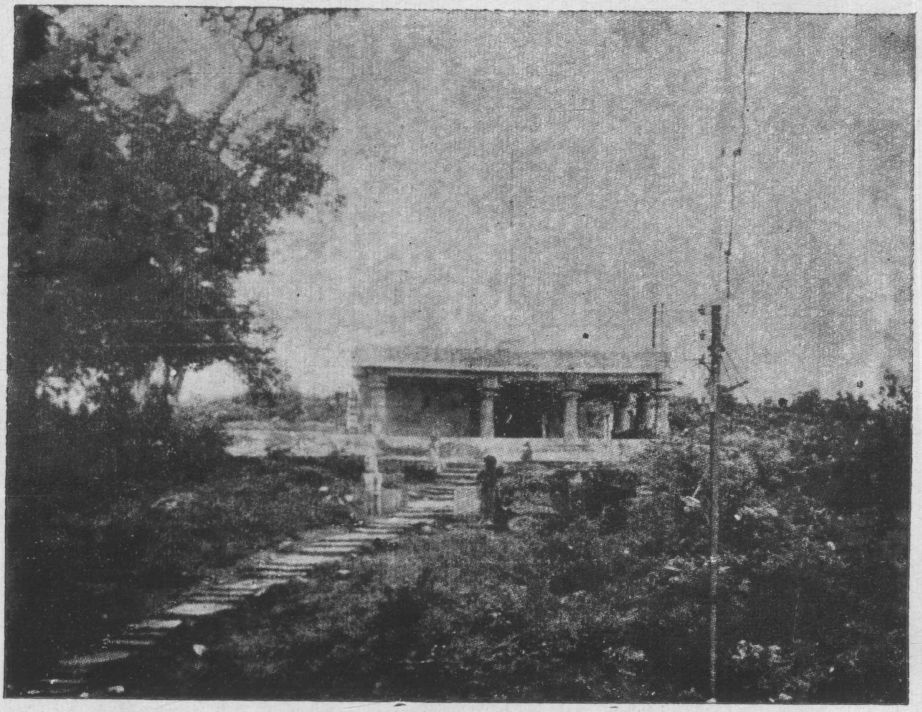

भद्रावती- गौराला का प्राचीन श्रीगणेश मंदिर

तिथी को पदयात्रा संघनायक आचार्यश्री के करकमलोंद्वारा शिलान्यास विधि संपन्न करा दी गई" ।

"सतना श्री संघ ने श्रीआदिनाथ भगवान के नामपर शिलान्यास किया था । और श्री संघ ने मंदिर निर्माण हेतु निधि एकत्रित करना आरंभ किया । निधि का प्रवाह, क्या गांव से और क्या परगांवसे, इस प्रकार आना शुरु हुआ कि देखते ही देखते दो वर्षो के अल्प समय में सात लाख रुपया लगकर संगमरमर का भव्य जिन मंदिर तैयार हो गया" ।

"हमारी भावना थी कि मूलनायकजी के रूप में तीर्थंकर श्रीआदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा विराजमान करें । अमदाबाद गये, सेठजी कस्तुरभाई से मिले, और बहुतसे प्राचीन तीर्थ घूमे, कलकत्ता तक जाकर आये, लेकिन प्राचीन मूर्ति हमें नही मिली" ।

"सतना वापिस आनेपर हमारे एक भतीजे ने मनोमन संकल्प किया, हे पार्श्वनाथ प्रभु, हमे निश्चित संकेत बतावे कि हम प्रभु श्रीआदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा कहाँ से प्राप्त करें, तबतक मै शक्कर घी आदि ग्रहण नहीं करूंगा" ।

"सातवे या आठवे दिन प्रात: उसे स्वप्न आया । देखता है भद्रावती मंदिर का प्रवेशद्वार और उस पर स्थित कमल में नाग देवता । हर्षित होता है, ध्वनि सुनता है, प्रभु श्रीआदिनाथ की प्रतिमा भद्रावती से लाओ" ।

"जाग उठता है, विचार करता है, भद्रावती तो गये थे, वहाँ तो ऐसी कोई प्रतिमा देखने में नही आई, और संकेत तो भद्रावती का मिला है, क्या किया जाय ? मित्रों से बात करता है और दिनके ११ बजे यहाँ के लिये फोन लगाता है" ।

१ नवंबर १९७४ को सतना श्री संघ के धर्मबंधु यहाँ आये । स्वप्नसंकेत की वार्ता सुनकर इच्छा न होते हुए भी, उनके आवेदन पर विचार करने के लिये मंडल की स्पेशल मिटींग ९ नवंबर को बुलाई गई, और सर्वानुमत से एक प्रस्ताव पास कर प्रभु श्रीआदिनाथ की सुंदर एवं प्राचीन प्रतिमा सतना श्री संघ को भेंट कर दी गई ।

२. भद्रनाग मंदिर :

स्टेशन की ओर से भद्रावती में प्रविष्ट होते ही, सडक के किनारे नवनिर्मित मंदिर समूह के पहले एक बहुत पुराना मंदिर दिखाई पडता है । मंदिर में एक शेषशाई मूर्ति दिखाई देती है । अंतरंग में भी एक बडी प्रतिमा है जिसके बारे में भद्रावती में तरह तरह की कल्पनाएँ और मान्यताएँ प्रचलित है । कोई उसे मणिभद्र की, तो कोई नागदेव की मूर्ति बतलाते है । भद्रनाग के नाम से लगता है कि मंदिर का तथा मुख्य मूर्तिका संबंध नागदेवता से है । मंदिर में ही शताब्दियों पुराना एक बावडीनुमा पत्थरों से खुदा पक्की सीढियों में बंधा हुआ काफी बडा एवं गहरा कुंआ है । मंदिर पर हर वर्ष एक मेला लगता है और जनश्रुति के अनुसार वहाँ पर एक विशाल नाग के दर्शन भी

होते है। इसी वजह से इसे धरणेन्द्र देव का मंदिर भी माना जाता है। सर्वसाधारण जनता "भद्र नागोबा" के नाम से यहाँ की मुख्य मूर्ति को पूजती तथा मानती है। सन् १२८६ में ग्रामवासियों ने इसी मंदिर का जीर्णोद्धार किया था और इसका वर्तमान नामकरण भी किया था।

३. पुराना किला :

भद्रावती के पुराने किले का जो खंडहर रूप आज दिखाई देता है, उससे स्पष्ट होता है की प्राचीन किला मूल में कितना मजबूत था, "खंडहर" बताते है कि इमारत बुलंद थी। किला पत्थरों का बना हुआ है, अंदर एक बडी चौमुखी बावडी है। किले में ऊंचाई पर एक जगह दिखाई देती है, वहाँ शायद् राजदरबार लगा करते होंगे।

४. विंझासन की गुफा :

मंदिर से दो मील दूर, गांव के बाहर एक पहाडी है, जिसमें एक दूसरे से सटी हुई तीन तरफ तीन गुफाएँ मिलती है। गुफाओं की दीवालें पत्थरों की है तथा उनमें तीनों तरफ सात-सात फुट ऊंचाई की तीन विशाल मूर्तियाँ खुदी हुई दिखाई देती है। मूर्तियाँ पद्मासनस्थ है तथा खंडित है आज इसलिये उन्हे देखकर उनमे से कौन किस धर्म या पंथ की है, ठीक से नहीं कहा जा सकता। कहते है की ये मूर्तियाँ भगवान बुद्ध की है। यह विंझासन की गुफा कहलाती है। यहीं **योगिराज श्री मोतीलाल महाराज साहब** ने तपश्चर्या पूर्वक निर्भय योगसाधना की थी।

५. चंडिका मंदिर :

श्री पार्श्वनाथ प्रभुका जो मुख्य मंदिर बना है, उसके पीछे कुछ ही दूरी पर एक प्राचीन चंडिका मंदिर है। वह मंदिर, उसकी प्रतिमाएँ तथा उसका बाहरी चबुतरा इ. सब सरकारके पुरातत्त्व विभाग के संरक्षण में है। मंदिर में देवी की आदमकद खडी प्रतिमा है। मंदिर के अंदर आजूबाजू वे प्रसार प्रतिमाएँ रखी गई है, जो मंदिर के आसपास मिली है। उनमे नृत्य-रत गणेश की भी एक सुन्दर प्रतिमा है। मंदिर की छत तथा दीवालें सब पत्थर की है। जो खंडित मूर्तियाँ मंदिर के अंतर्प्रांगण में है, उनमें हिन्दु, बुद्ध एवं जैन धर्म से संबंधित मूर्तियाँ है। चंडिका मंदिर में जो देवी की मूर्ति है, वह ममतायुक्त प्रसन्न, एवं प्रभावोत्पादक मातृ-मूर्ति लगती है, उसका शिल्प प्रमाण-बद्ध एवं रेखांकन सजल सजीव है।

६. छोटी टेकडी :

उक्त मंदिर के पीछे थोडी ही दूरी पर एक टेकडी है। इस टेकडी पर फिलहाल महातपस्वी श्री चारित्यमुनिजी की पादुकाएँ स्थापित है, वे **महान तपस्वी योगिराज मोतीलालजी महाराज साहब के शिष्य थे**। ८४ वे उपवासके दिन आपका यहाँ स्वर्गवास हो जाने से इस टेकडी पर दाहकर्म किया गया था, इसलिये उनकी पादुका की स्थापना इस टेकडीपर की गई है।

७. डोलारा तालाब तथा शिलाओं का पूल :

इसी टेकडी से लगा हुआ १७ एकड

भू–विस्तार में फैला एक बडा भारी तालाब है, इस तालाब के बीच में एक टेकडी है जिस पर जाने के लिये सात फुट चौडा सिर्फ बडी बडी शिलाओं के आधारपर खडा एक पुल है। पुल के नीचे जो खंभे है उनमें चौरस मोटी लंबी लंबी शिलाएँ बिना किसी जुडाई के एक दूसरे के उपर संतुलित कर रखी गई है। इस प्रकार से संतुलित किसी भी तरह की जुडाई के बिना, ये खंभे अपने सिरों पर एक बृहद पुल को सदियों से उठाये खडे है। पुल बहुत भारी एवं चौडा है, बडी शिलाएँ सिर्फ सटाकर संतुलित की गयी है। कहीं सिमेंट, चूने मिट्टी या किसी प्रकार का जोड नहीं है। इस दृष्टि से यह पुल एक बेजोड अचंभा सा लगता है। इस डोलारा तालाब में से खुदाई में सैकडों जैन-बुद्ध तथा हिन्दु धर्म से संबंधित मूर्तियाँ निकली है। अब भी वहाँ कई मूर्तियों के विभिन्न टुकडे बिखरे दिखाई देते है।

श्री चंडिका मंदिर, डोलारा तालाब, विंझासन की गुफा, भद्रनाग मंदिर तथा जैन बुद्ध एवं हिन्दु धर्म से संबंधित सैकडों प्रस्तर प्रतिमाएँ पत्थरों में खुदी हुई बावडियाँ और कुअें, प्राचीन किले के खंडहर इस बात के प्रमाण है कि भद्रावती नगरी कभी न सिर्फ एक अैश्वर्यशालिनी नगरी थी, बल्कि विद्या और कला के साथ साथ विभिन्न धर्मों, पंथों, साधकों तथा तपस्वियों की मिलनस्थली एवं केन्द्रस्थली थी।

८. चरम तीर्थंकर महावीर स्वामी :

२५०० वा निर्वाण वर्ष प्रारंभ हो चुका है। योगायोग कहिये या चमत्कार, भगवान श्रीमहावीर स्वामी की एक प्राचीन व सुंदर प्रतिमा यहाँ के दुधारा तालाब के पास के झाडी मे पुरातत्त्व विभाग को खनन कार्य करते समय उपलब्ध हुई है। अभी भी इस प्रतिमाजी का केवल कमर तक ही भाग दृष्टिगोचर होता है। शेष खुदाई होना बाकी है। मण्डल ने पुरातत्त्व विभाग से इस मूर्ति को प्राप्त करने की कोशिष शुरु कर दी है।

प्रथम तीर्थंकर श्रीआदिनाथ भगवान, तेवीसवे तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ भगवान और चोविसवे तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी भगवान का भद्रावती मे पाया जाना एक ऐसे इतिहास का संकेत देता है कि अतिप्राचीन समय में भद्रावती न केवल, एक जैन तीर्थ था, बल्कि जैन संस्कृति और दर्शन का प्रमुख केन्द्र था। बौद्ध, वैदिक एवं जैन संस्कृतियाँ तथा शिल्प भी यहाँ विद्यमान थे। क्या उस समय भिन्न धर्मावलंबियों में इतना समन्वय और इतनी सहिष्णुता थी की प्राचीन भद्रावती नगरी में ये भिन्न धर्म प्रणालियाँ साथ साथ फलती फूलती रही ?।

●●●

७

वर्तमान तीर्थ भद्रावती

१. श्री ऋषभदेव मंदिर :

नागपूर के दानवीर सेठ स्व. माणिकचंदजी जौहरी (चौरडिया) ने प्रथम तीर्थंकर दादा श्री श्री १००८ श्रीऋषभदेव भगवान का एक सुन्दर भव्य मंदिर प्रांगण में बनाया है। मंदिर शिखरबंद है। स्व. माणिकचंदजी के बडे भतीजे स्व. पानमलजी जौहरी अपने जीवन काल तक उनका खर्च देते रहे। अब, मंडल उनका खर्च वहन करता है।

२. दादाबाडी :

मुगल सम्राट अकबर को प्रभावित कर उनसे पूरे देश में छः माह तक कसाईखाने बंद करने का फरमान निकलवानेवाले, ओसवंश के निर्माता, लाखों अजैनों को जैन बनानेवाले महाप्रभावी जंग[illegible]धान चारों दादा गुरुदेव श्री १०८ श्री जिनदत्तसुरीश्वरजी महाराज साहेब, श्री जिनचंद्रसुरीश्वरजी महाराज साहेब, श्री जिनकुशलसुरीश्वरजी महाराज साहेब एवं मणिधारी श्री जिनचंद्रसुरीश्वरजी महाराज साहेब की पादुकाएँ और श्री जिनदत्तसुरीश्वरजी महाराज साहेब की मूर्ति को प्रतिष्ठित कर एक मंदिर प्रांगण में बनाया गया है। वरोरा के श्री नेमीचंदजी पारख के उदार योगदान से यह मंदिर बना है। इस मंदिर में उक्त चारों दादाओं की विशेष उपलब्धियाँ भीत्ति-चित्रों द्वारा प्रदर्शित की गई है। साथहि आचार्य हेमचंद्राचार्य महाराज साहेब कुमारपाल राजा को प्रतिबोध करते हुए चित्र भी अंकित किये है।

३. तपस्वी मंदीर :

स्व. श्री मोतीलालजी महाराज साहब इस क्षेत्र में विचरण करनेवाले एक कर्मठ साधु, महान तपस्वी तथा अद्‌भुत योगी थे। जंगल और गुफाएँ उनके साधना-स्थान तथा निवास-स्थान थे। तब विंझासन की गुफाएँ घने जंगलों से घिरी हुई थी, दिन में भी सूरज की किरणें वहाँ प्रवेश नहीं पा सकती थी, जंगली खूंखार प्राणी, शेर आदि रोजाना आया करते थे। **स्व. मोतीलालजी विंझासन की उन्ही गुफाओं में निर्भय, निर्वेद होकर ध्यान-समाधि में तल्लीन रहा करते थे।** वर्षीतप, उनकी दिनचर्या, श्री भगवान के दर्शन, व्याख्यान और गोचरी के लिए आप मानव समाज के संपर्क में आते थे। बाकी समय वे निसर्गाधीन रहा करते थे। उन्ही के शिष्यरत्न महाराज श्री चारित्र्यमुनिजी महाराज भी बहुत पहुंचे हुए तपस्वी थे, वे भी इसी क्षेत्र में विचरा करते थे। उनकी दीक्षा

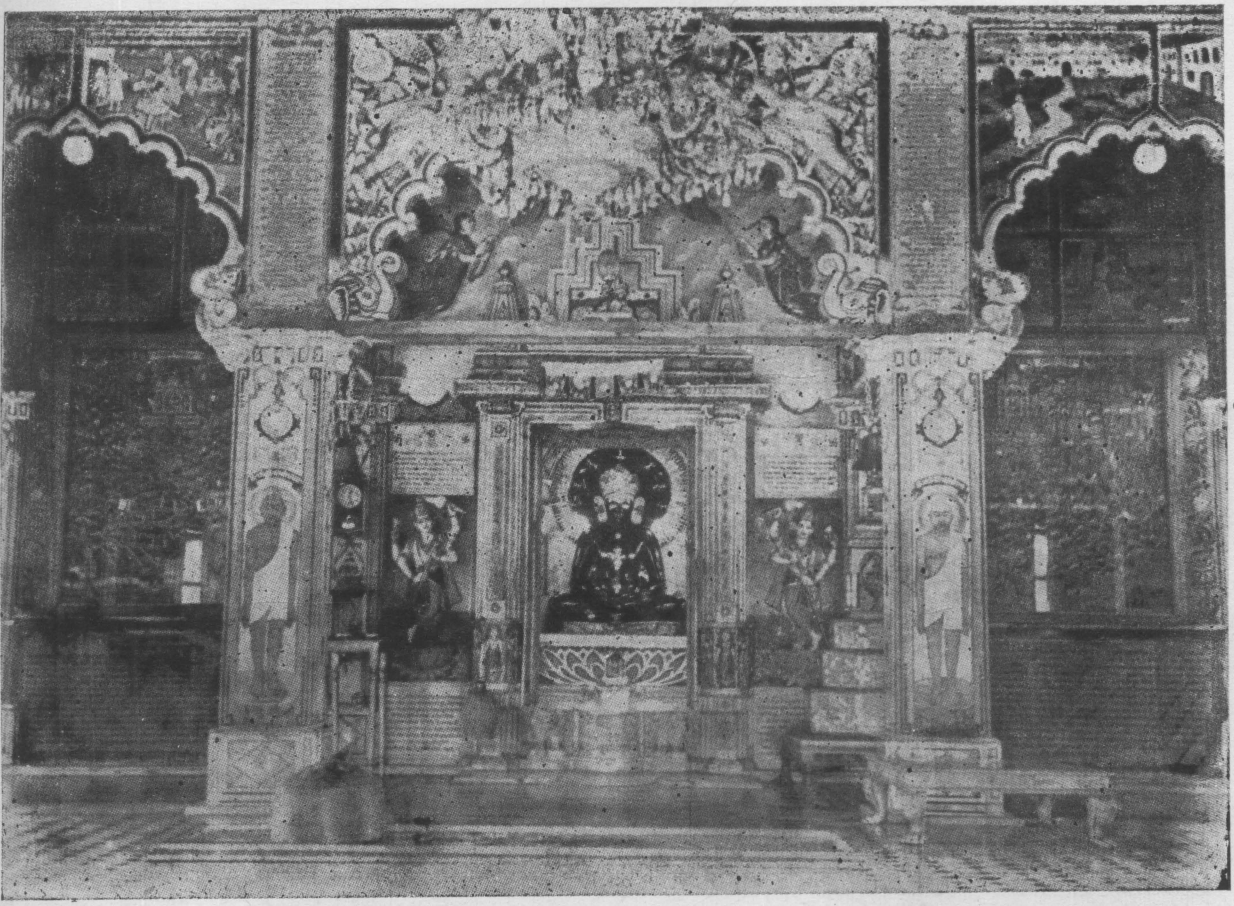

सभा मंडप से प्रभुदर्शन !

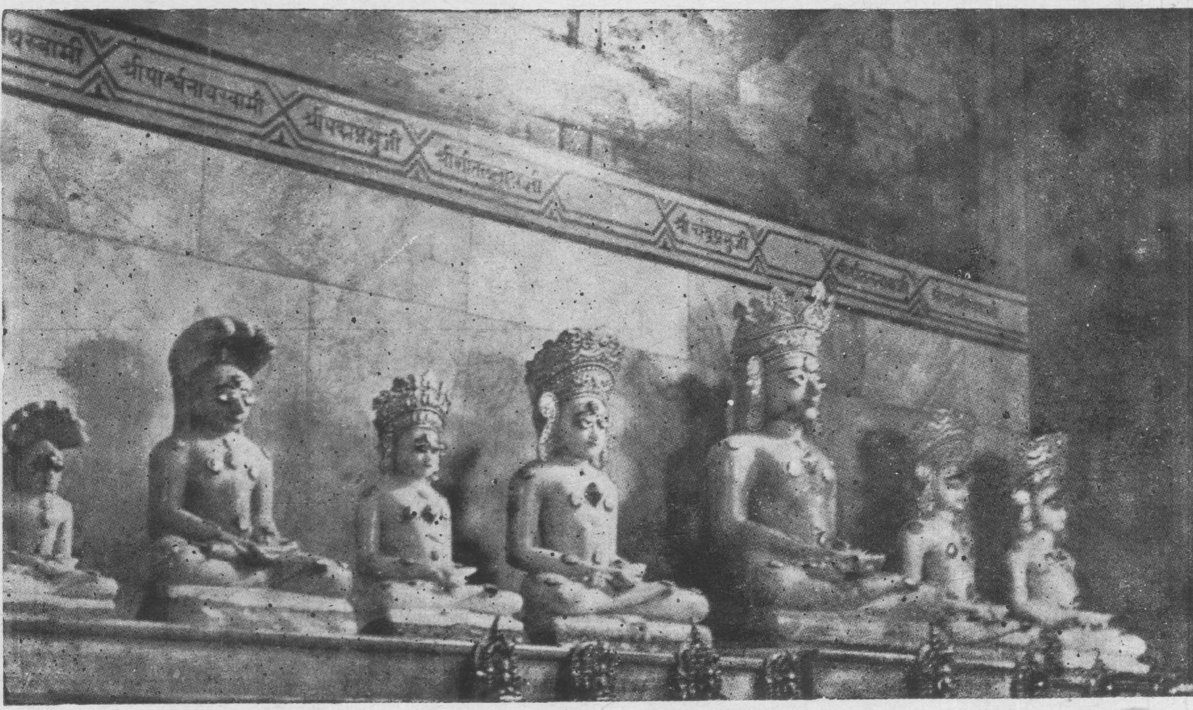

मूलनायकजी के बाँये भाग में श्री चन्द्रप्रभूजी आदि भगवान !

मूलनायकजी के दाहिने भाग में श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ आदि !

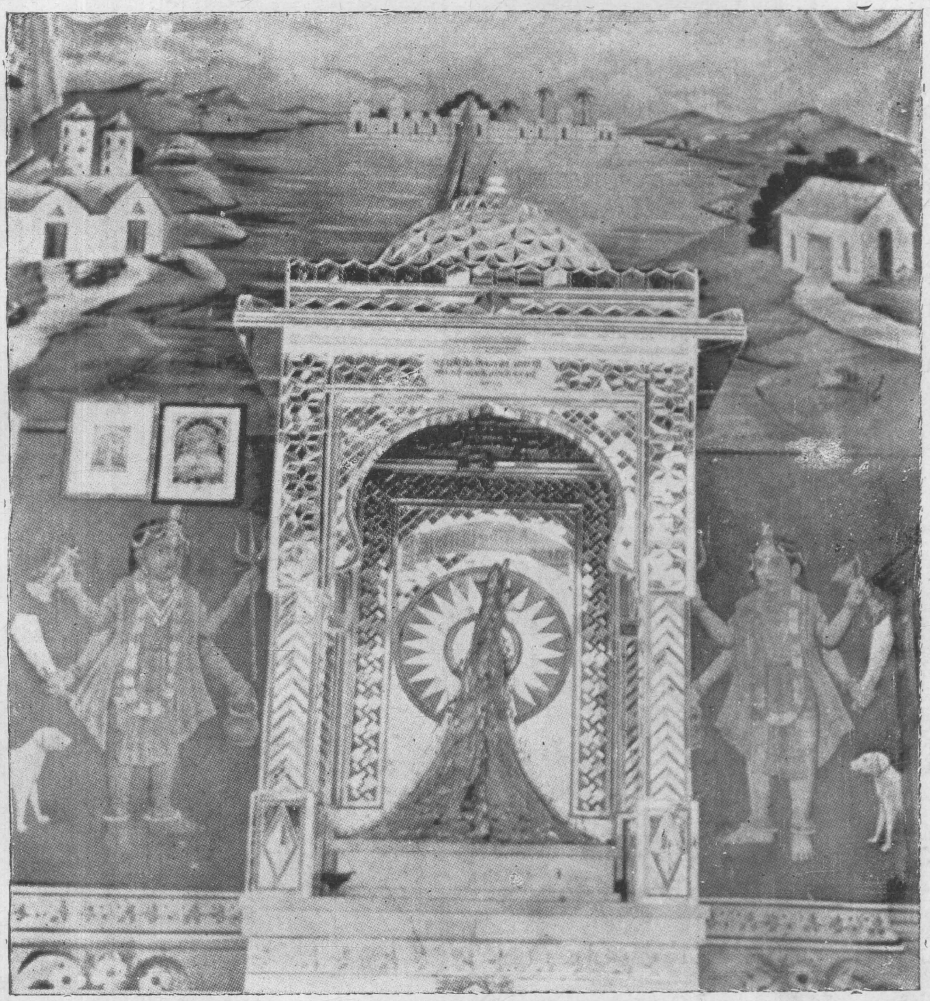

अधिष्ठायक श्री भैरवजी

नागपूर निवासी दानवीर स्व. सेठ श्री. माणकचंदजी जौहरी का सुपरिचित स्टॅच्यू जो याद दिलाता है इस तीर्थ के प्रति संपूर्ण समर्पण.

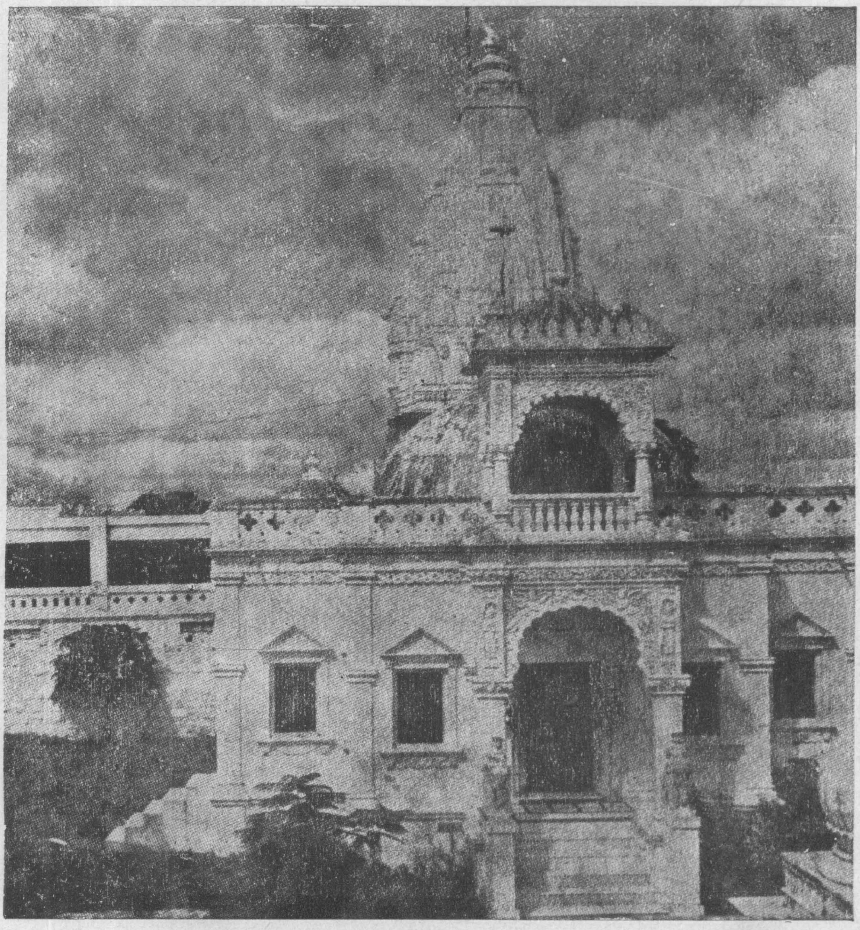

स्वर्गीय दानवीर श्री माणकचंदजी जौहरी नागपूर निवासी
द्वारा निर्मित
भव्य श्री ऋषभदेव मंदिर

स्व. श्री. अजितमलजी नेमीचंदजी पारख, वरोरा निवासी द्वारा
निर्मित श्रीदादा मंदिर

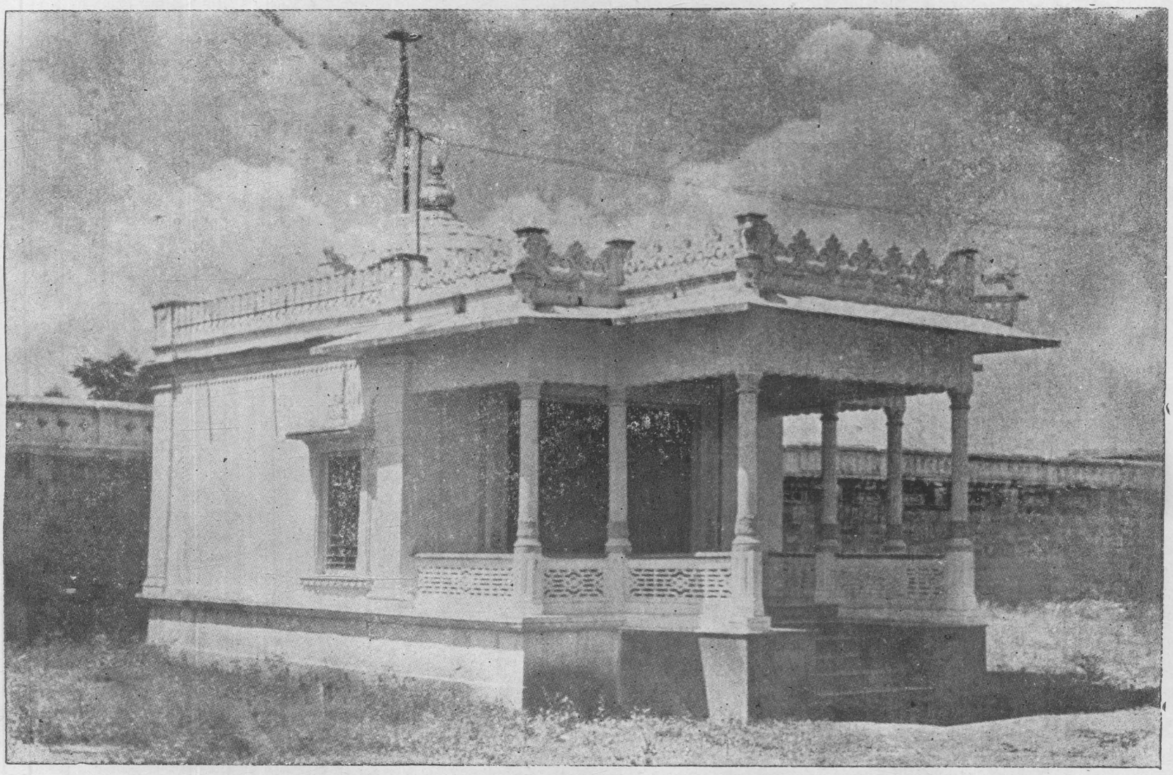

योगीराज स्व. श्री मोतीलालजी महाराज साहेब एवं उनके शिष्य महान तपस्वी स्व. श्री चारित्रमुनीजी महाराज के स्मृति में निर्मित तपस्वी मंदिर.

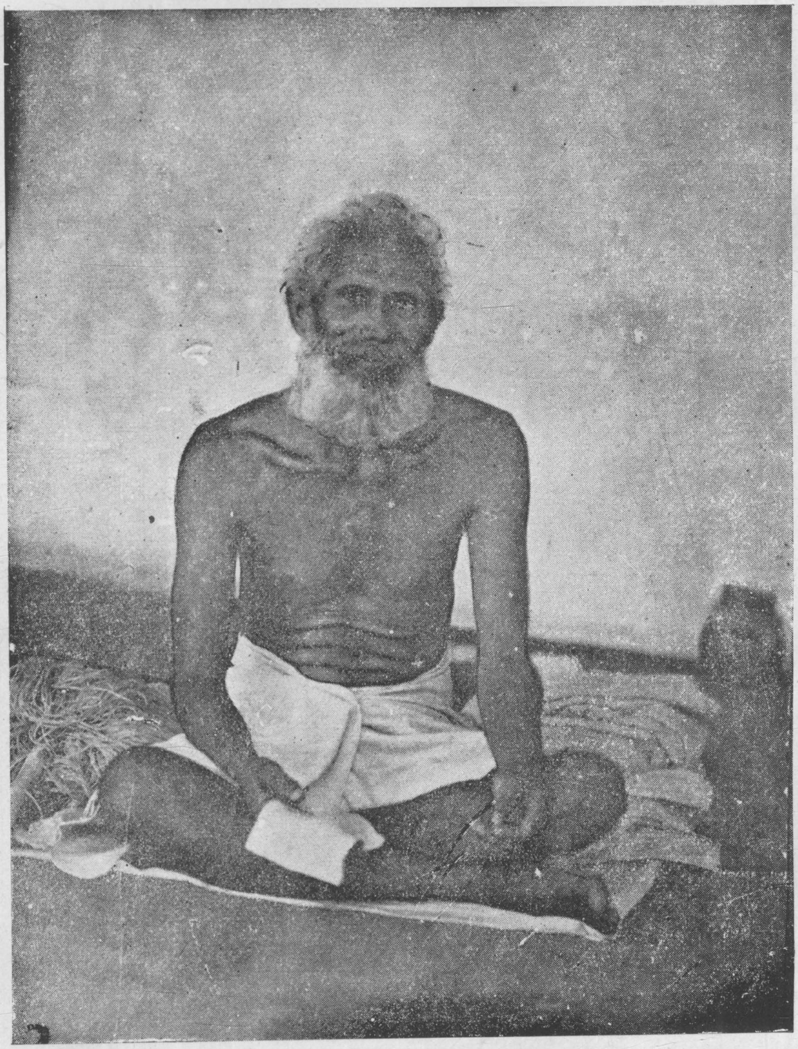

स्व. श्री. १०८ मोतीलालजी महाराज
स्वर्गवास वि. सं. २००० कार्तिक बदी १२

बालब्रम्हचारी तपस्वी श्री १०८ चारित्रमुनिजी

पौष वदी १० जन्म कल्याणक महोत्सव वरघोडे का एक दृष्य !

स्लाय गेट से रथयात्रा

आप सबके सुपरिचित कर्मठ और सेवाभावी पूजारीजी श्री झंवरीमलजी बोरा प्रतिदिन इसीप्रकार स्नात्रपूजा करते हुए.

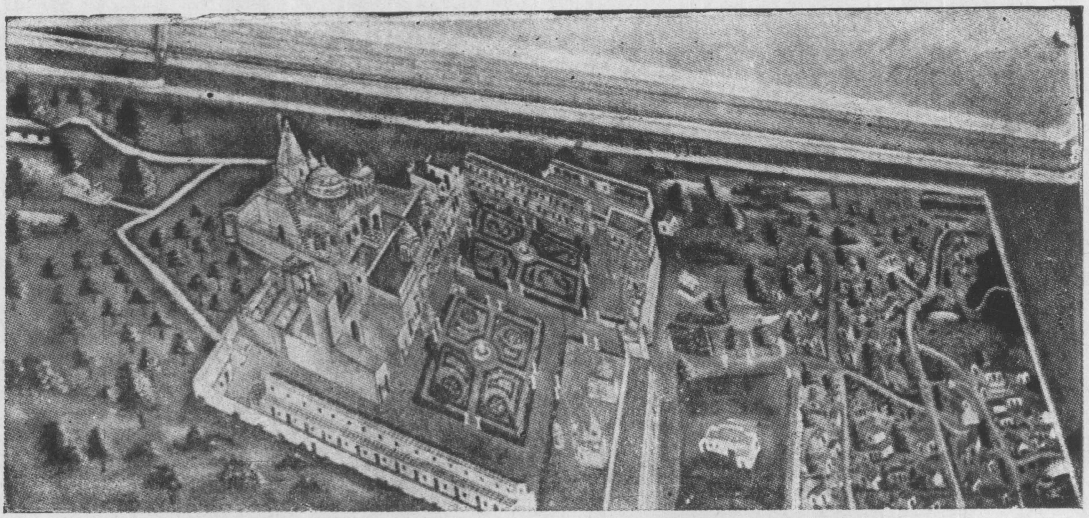

आर्टिस्ट श्री हरिशंकर शर्मा उदयपूर की नजर में
तीर्थ भद्रावती का विहंगम दृष्य !

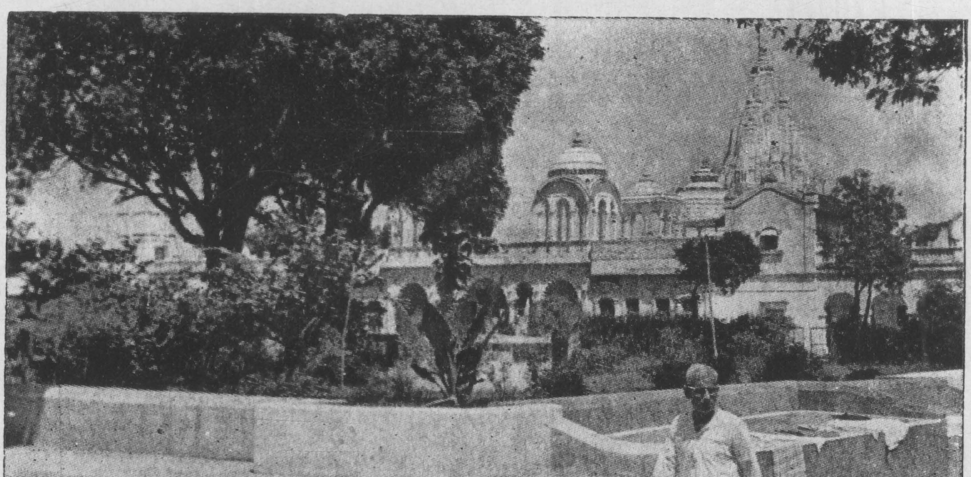

प्रमुख मंदिर एक विहंगम दृष्य !

वर्तमान तीर्थ भद्रावती के फुलबाग परिसर में धर्मशाला

गौ शा ला
जहाँ तकरीबन गाय, बछडे आदि मिलाकर १०० गोधन है !

स्व. श्री. सुरजमल बोरा चान्दा निवासी द्वारा निर्मित
आयुर्वेदिक औषधालय

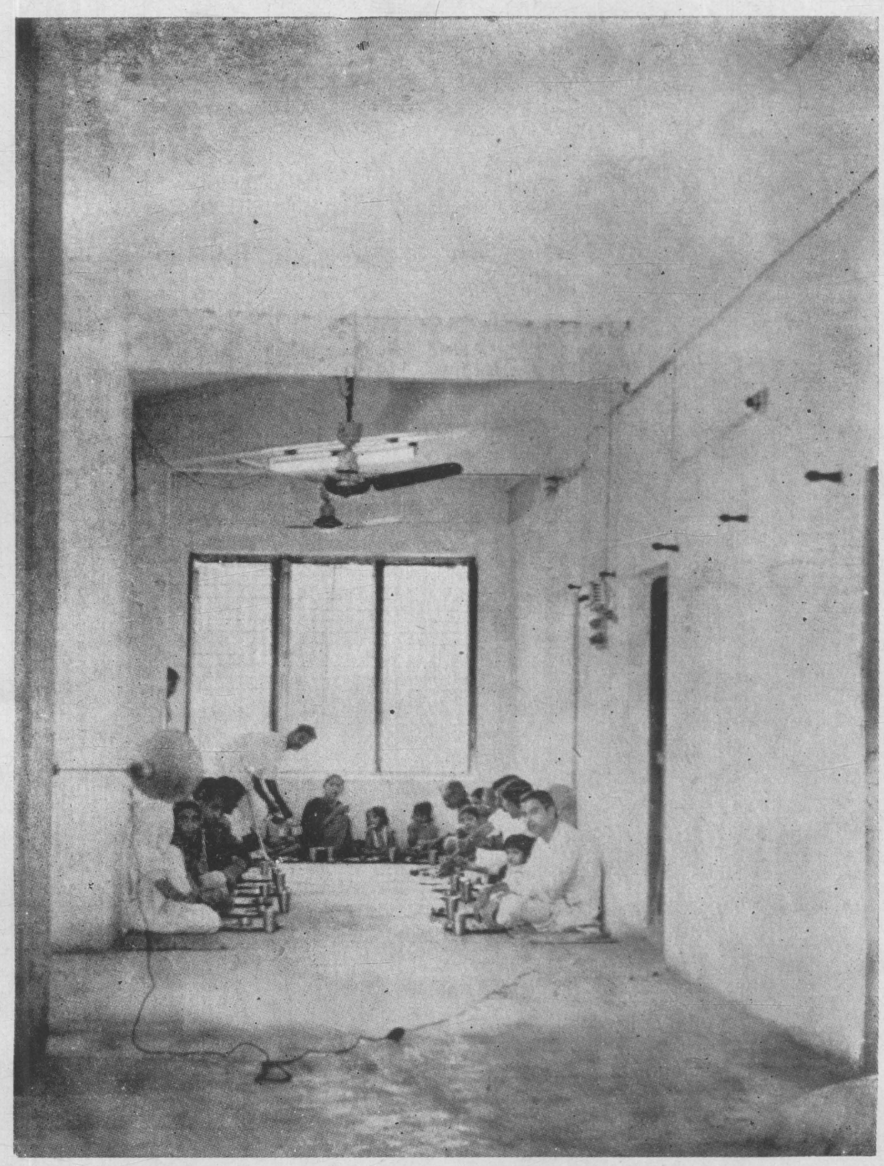

भो ज न शा ला

आपके सहयोग से निःशुल्क चल रही है !

मेले में जिनके परिश्रम से हमको और आपको रुचिकर भोजन मिलता है !
पहिचानिए रसोइये कौन कौन है ?

बाएं से दाएं:- १. स्व. श्री. तिलोकचंदजी कोठारी, हिंगणघाट २. कढई हिला रहें है चांदा के श्री. रेखचंद पुगलिया ३. नारायण महाराज, हिंगणघाट ४. स्टूल पर बैठकर निर्देशन कर रहें है श्री. तेजकरण मरोठी, B. Com हिंगणघाट, बताइये मौज खानेवालोंकी है या बनानेवालों की !

इसी तीर्थ में हुई थी। उन्होने यहाँ कई मासक्षमण किये तथा दो माह का उपवास रखा था। अन्तिम तपश्चर्या मे उन्होने ९० दिन के उपवास का संकल्प लिया था। इसी महत्साधना मे ८४ वे दिन उनका स्वर्गवास हो गया।

उपर्युक्त तपस्वीद्वय की पावन स्मृति में तपस्वी मंदिर का निर्माण किया गया है।

४. धर्मशालाएँ :

भद्रावती की कीर्ति–सौरभ जैसे जैसे भारत में अभिव्याप्त होने लगी, वैसे वैसे प्रति वर्ष श्रद्धालु तीर्थयात्रियों एवं प्रवासियों की संख्या में अभिवृद्धि होने लगी। पिछले वर्ष यात्रियों की यह संख्या १५ हजार से अधिक थी। उन सबकी रहने–खाने की अधिकाधिक सुख–सुविधाओं की दृष्टि से धर्मशालाओं का निर्माण बहुत ही आवश्यक था। अभी तक यहाँ दो सौ से जादा कमरों की चार धर्मशालाएँ बन गई है। मंदिर के कुअे पर इलेक्ट्रीक पंप फिट हुए है, जिससे चौवीसों घंटे जल मिलते रहता है।

५. पुष्पोद्यान :

धर्मशालाओं के बीच में विशाल प्रांगण है। जिसमें दो चौकोन पुष्पोद्यान लगे है। बीच–बीच में सुन्दर मनोहर सायेदार आम्रवृक्ष है। चारों और गुलाब तथा मेहंदी की बाड है।

६. फलोद्यान :

मुख्य प्रांगण से सटा हुआ पन्द्रह एकड का फल बाग है। उसमें संतरे, आम तथा जाम के पेड है। इन बगीचों ने मंदिर के परिसर को एक उपवन में परिवर्तित कर दिया है।

७. भोजनशाला :

यदि श्रद्धालु यात्रियों को भोजन बनाने–खाने की झंझट करनी पडे तो उनके ध्यान-ज्ञान में खलल पैदा होती है। तीर्थों में यही एक न टाले जानेवाली बात यात्रियों का बहुत अधिक समय नष्ट कर डालती है। इस दिक्कत को महसूस करके भद्रावती शासन–संघ ने यात्रियों के लिये भोजन की व्यवस्था कर रखी है। तदर्थ एक अच्छी बडी भोजनशाला बनाई गई है। यात्रियों को वहाँ सात्विक एवं शुद्ध भोजन निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है। सबेरे नाश्ते का भी प्रबंध है।

८. औषधालय :

चंद्रपूर निवासी स्व. श्री सूरजमलजी जालोरी बोहरा के उदार दान से श्री पार्श्वनाथ औषधालय भवन निर्मित हुआ है। औषधालय आयुर्वेदिक है और आयुर्वेद की औषधियों का निर्माण भी वहीं किया जाता है। एक सफल वैद्यराज की देखरेख में औषधालय से मुफ्त निदान एवं औषधी – आयोजन किया जाता है। प्रवेश शुल्क नाममात्र है। प्रति वर्ष १३–१४ हजार रोगी औषधालय का लाभ उठाते है।

९. गौशाला :

मंदिर के पास ही एक गौशाला है जिसमें

सौ से अधिक गायें तथा बछडे आदि है। गौशाला पर मंडल का वार्षिक खर्च २५-३० हजार रुपये है। जो दूध होता है, वह भगवान के प्रक्षाल तथा यात्रियों के उपयोग में आता है।

१०. भाताखाता :

तीन वर्ष पहले एक वृद्ध महिला यात्री के सुझाव पर इस भाताखाते का प्रारंभ किया गया। तीर्थ के अनन्य सेवक हिंगणघाट निवासी श्रीमान तिलोकचंदजी कोठारी ने उक्त श्रद्धालु यात्री के प्रथम दान से मंदिर के भाताखाते की प्रवृत्ति को शुरु किया। तद्नंतर श्री बालुभाई सूरतवाला के नेतृत्व में एक यात्री संघ आया था। श्री कोठारीजी के अनुरोध पर उक्त संघ में १०१ रुपये की एकतीस मित्तीयाँ भरवाई। तीर्थ स्थान पर जो यात्री आता है, उसे प्रथम दिन सबेरे भाता दिया जाता है।

मंडल ने अब इन मित्तीयाँ को भाता स्थायी फंड में परिवर्तित कर उसकी राशि १०१ रु. निर्धारित कर दी है। यात्री भाताखाता में जो भी योगदान देना चाहते है, उसे सहर्ष स्वीकार किया जाता है।

११. कार्तिक पौर्णिमा महोत्सव :

चातुर्मास समाप्ति का यह महत्वपूर्ण दिवस है। उस दिन यहाँ शेत्रुंजय पट के दर्शनार्थ आसपास के बहुत अधिक तादाद में श्रद्धालु भक्तजन पधारते है। पूजा, भावना आदि होती है, कई वर्षोंसे हिंगणघाट निवासी स्व. हीरचंदजी अमोलकचंदजी कोठारी व चंद्रपूर निवासी स्व. श्री सूरजमलजी बोरा एवं उनके वंशज आज तक इस दिन सुबहशाम स्वामिवत्सल करते है।

१२. जन्मकल्याणक महोत्सव :

प्रति वर्ष पौषवदी ९ से पौषबदी ११ तक "श्रीपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव" का मेला लगता है। उक्त मेले में हजारों यात्री सम्मिलित होते है। पौष बदी १० को रथयात्रा का जुलूस निकलता है। स्नात्रपूजा, बडी पूजाएँ, भावनाएँ, आंगी, रोशनी आदि कार्यक्रम बडे आनंदोल्लास से होते है। तीनों दिन साधर्मीवात्सल्य तथा अल्पाहार का प्रबंध किया जाता है।

कई वर्षोंसे निम्न साधर्मी बंधू एवं उनके वंशज इस अवसरपर साधर्मीवात्सल्य का आयोजन करते है, जिसका हजारों यात्री लाभ उठाते है। प्रतिवर्ष हजारों का खर्च कर वे तीर्थ और समाजकी जो अनुकरणीय भक्ति कर रहे है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय उतनी थोडी है।

पौष बदी ८ –
श्री मोहनलालजी कोटेचा अडेगांव, सबेरे

पौष बदी ९ –
श्री मोटाजी रघुनाथ पूना, सबेरे

पौष बदी ९ –
श्री हस्तीमलजी पारख राजीम, दोपहरको

पौष बदी १० –
श्री हजारीमलजी रेखचंदजी पारख बंबई,
सबेरे-दोपहरको

पौष बदी ११ –
श्री अनोपचंदजी नेमीचंदजी कोठारी,
कुसुमकसा, दोपहरको

तीनों दिन चायपान –
श्री आइदानजी जमनालालजी छाडोड,
राजनांदगांव ।

जैन सम्मेलन

भिन्न भिन्न नगरोंसे, राज्योंसे साधर्मी भाई बहनोंके आगमनसे, सार्धमियोंके स्नेहमिलन का एक अपूर्व संयोग प्रतिवर्ष यहाँ देखने को मिलता है । इसीका लाभ उठाकर पिछले तीन वर्षोंसे इस अवसरपर जैन सम्मेलन आयोजित किया जाता है । प्रथम सम्मेलन भारत जैन महामण्डल के प्रमुख श्री शादीलालजी जैन एवं मंत्री श्री ऋषभदासजी रांका के सभापतित्व और मार्गदर्शन में संपन्न किया गया । धार्मिक एवं सामाजिक समस्याओं पर पारस्परिक चर्चा करनेका यह एक मंच हो गया है ।

१३. प्रतिष्ठा दिवस :

प्रथम ध्वजारोहण तिथि फाल्गुन शुक्ल ३ को इस तीर्थ की पुनस्थापना एवं प्रतिष्ठा के बाद से हर साल यह दिन "ध्वजारोहण महोत्सव" के रुप मे मनाया जाता है । उक्त अवसर पर बाहर से काफी यात्रीगण पधारते है ।

इस दिन भी कई वर्षोंसे अडेगांव निवासी श्रीमान मोहनलालजी कोटेचा साधर्मीवात्सल्य का आयोजन करते है ।

१४. ग्रीष्मकालिन धर्म-शिक्षा-शिबिर :

जैन युवकोंमे धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करने के उद्देश से महाकौशल जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ के तत्त्वावधान मे एक ग्रीष्मकालिन धार्मिक शिबिर का आयोजन किया गया था । शिबिर में १३३ विद्यार्थीयोंने हिस्सा लिया था । शिबिर २१ दिन चला । महाकौशल श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ के सभापति श्री मेघराजजी बेंगानी, महामंत्री श्री कालूरामजी बाफना, मन्दसौर के श्री सुरेन्द्रकुमारजी लोढा, बंबई के श्री कुमारपालभाई राजनांदगाँव के श्री निर्मलकुमारजी बरडिया आदि महानुभावों ने शिबिर में २१ दिन तक रहकर शिबिरार्थियों को संस्कार – दीक्षा प्रदान की ।

उक्त ढंग के शिबिर आगे भी होते रहें, ऐसा सोचा जा रहा है ।

१५ उपध्यानतप :

इस तपोभूमि मे कई उपध्यान तप हुए है । ३०–३५ वर्ष पूर्व प्रथम उपध्यान तप तपस्वी स्वर्गीय श्री मोतीलालजी महाराज साहब ने करवाया था । द्वितीय उपध्यान तप का आयोजन सन् १९५६ में मुनिश्री कांतिसागरजी एवं मुनिश्री दर्शनसागरजी महाराज साहब की निश्रा में चांदा निवासी स्व. सेठ श्री लूणकरणजी खजानची द्वारा करवाया गया था । उसका लाभ लगभग ८० भाई–बहनोंने उठाया था । माल महोत्सव में पहली माला उत्राण निवासी श्रीमान शिवलालजी संघवीने

अपनी भगिनी चांदा निवासी सौ. हीरा कुंवरबाई गोलेच्छा (धर्मपत्नी श्री चेनकरणजी गोलेच्छा) को पहनाई थी ।

तृतीय उपध्यानतप सन् १९७० में मुनिश्री उदयसागरजी तथा मुनिश्री महोदय सागरजी महाराज साहब एवं साध्वीजी श्री विज्ञानश्रीजी महाराज साहब एवं भारत कोकिला श्री विचक्षणश्रीजी महाराज साहब के निश्रामें मद्रास निवासी दानवीर सेठ श्री केवलचंदजी खटोड द्वारा करवाया गया, जिसमें लगभग १२५ भाई बहन लाभान्वित हुए । माल–महोत्सव मे पहली माला श्री छबीलदासभाई ने अपनी बहन मद्रास निवासी सौ. श्रीमती चंदनबहन (धर्मपत्नी श्रीमान पूनमचंदभाई शाह) को पहनाई थी ।

●●●

दुःखमें से सुख के बीज खोज निकालनेको 'आशा', सुख में भी दुःख की अनुभूति को 'निराशा' कहतें है । पाप का झरा दिखने में छिछोरा लगता है, किन्तु अन्दर पैर रखते ही पाताल कूंवा बन जाता है ।

८

तीर्थ की प्रतिष्ठा कैसे बढाएँ?

"जैन तीर्थों की इमारत तप, त्याग और अध्यात्म चिंतन के बुनियाद पर खडी है। जिस भूमी में ये गुण खिलें है, वह भूमि तो तीर्थ का शरीर है, और उस भूमिपर निर्मित विशाल कलापूर्ण मंदिर, ये उस शरीर या उस आत्मा के अलंकार है"।

"जैन तीर्थों में आत्मा, शरीर और आभूषण ये तीनोंही मौजूद है। पर आज, तप, त्याग और अध्यात्म चिंतन रुपी आत्मा, इन्ही तीर्थ क्षेत्रों मे से प्रायः लुप्त हो गई है। क्यों?"

"जब वृत्ति अंतर्मुख होती है, तबही तप त्यागादि तत्त्व जन्म लेते है, और विकसित होते है। यही वृत्ति बहिर्मुख होतेही ये तत्त्व ओझल होने लगते है। आज स्थूल पूजन पद्धति को ही इतना अधिक महत्त्व दिया जाने लगा कि, भिन्न भिन्न पूजन पद्धति के कारण श्वेतांबर दिगंबर में निरंतर संघर्ष चलते रहता है। कइ तीर्थों मे आज भी हक्कों के लिये कोर्ट कचहरीयों में विवाद चालू है"।

"इस विवाद का क्या कोई हल नहीं है? जैन दर्शन कहता है, सहृष्णुता बर्ती जाय। एक पक्षीय उदारता का अर्थ होगा, अधिकार त्याग, किन्तु समाज की एकता के लिये जो भी पक्ष उदारता दिखायेगा, इतिहासकार की नजर में वही विजेता माना जायगा"।

"कांटा चुभता है, तब दर्द होता है, और उसको खींच कर निकालते समय भी दर्द होता है। परंतु कांटे को खींचकर निकालने में जो दर्द होता है, वह न हो, इसलिये क्या उसे शरीर के अन्दर रहने देना बुद्धिमानी होगी? इसी प्रकार जैनपन की भावना में जो अभिमान का या ममत्त्व का कांटा गड गया है, और जिसके कारण श्वेतांबर दिगंबर दोनों को जो वेदना हो रही है क्या उसे निकालने का पुरुषार्थ नही किया जाय? जैन तीर्थों की महत्ता बढाने के लिये यही एक अध्यात्मिक उपाय है"।

"तीर्थों की प्रतिष्ठा बढाने का समयानुकुल और व्यावहारिक एक अन्य मार्ग भी है। जहाँ जहाँ संभव हो, उन सभी तीर्थस्थानों में विद्याधाम का निर्माण क्रांति या कानून द्वारा विवश करें। लेकीन उससे पहीलेही इन तीर्थों में विद्याधाम स्थापित कर दिये जाय तो कितना सुंदर।" ये है प्रकाण्ड पंडित सुखलालजी संघवी

के मननीय विचार। इसी संदर्भ में विचार करना होगा की हम हमारी खोई हुई आत्मा को कैसे प्राप्त करें ?

कहते है, भगवान ऋषभदेव के जमाने में स्वयं भगवानने जनता को वे विद्याएँ और कलाएँ सिखाइ, जिनकी अहिंसक पद्धतिसे जीवन निर्वाह करने के लिए आवश्यकता थी। कृषि, सुतारकाम, लुहारकाम, कुंभारकाम, बुनकर का काम आदि सब उन्होने लोगों को सिखाया।

स्वयं भगवान महावीर के जमाने में, यद्यपि उन्होने प्रमुखतः निवृत्ति मार्ग का ही प्रतिपादन और प्रचार किया, उचित प्रवृत्तिमार्ग का जो की भगवान ऋषभदेव की देन है, निषेध नही किया। यही वजह है कि, भगवान महावीर के श्रावक परंपरा में आनंद श्रावक जैसों का नाम आता है जो एक नही ५०० जोडी बैलोंसे खेती करते थे।

इसीलिए हम देखते है कि, भगवान महावीर के श्रमण संघ में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र इन चारों वर्णाश्रमों मे से लोग आये। और इसीलिये भगवान के समय में ३६०० साधू साध्वी और तीन चार लाख श्रावक श्राविकाएँ थी। भगवान के पश्चात कई प्रभावी आचार्य हुए जिनके समय में ये संख्या और भी बढी।

किन्तु जैसे जैसे हमारेमें पंथ भेद पडने लगे, जैसे जैसे हर जीवनोपयोगी प्रवृत्ती में हम पाप के दर्शन करने लगे, जैसे जैसे अहिंसा का दायरा हम संकीर्ण और संकुचित करते चले गये, वैसे वैसे जैनीयों की संख्या सिकुडते चली गई। आज ५५ करोड की आबादी में हमारी संख्या २०-२५ लाख के ऊपर नही है। और जो है वह भी प्रमुखतः वैश्य याने व्यवसाय व्यापार करनेवाले समाज में। और इतने छोटे समाजमें भी हमारे अनेक पंथों का अनेक संप्रदायों का यदि विचार करें, तो चित्र बडा निराशाजनक प्रतीत होता है।

इस संदर्भ में हमे, हर एक साधर्मी बंधू अथवा बहनको, विचार करना है, "हम क्या थे, क्या हो गये, और हमें क्या होना चाहिये ?" वर्तमान युग की यह सबसे बडी चुनौती है। २५०० वे निर्वाण शताद्बी वर्ष में "सारे जैन एक हो," यह नारा बुलंद किया गया। पर वास्तव में क्या हम अंतःकरण से एक हुए ? राग द्वेष को जीतने वालों को हम, अरिहंत सिद्ध परमात्मा कहकर उनकी पूजा करते है, किन्तु स्वयं अपने मे से राग द्वेष को कितना कम कर पाते है ? ।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में अब यह विचार करना आवश्यक हो गया है कि, जिन समस्याओंका हमे समाधान ढूंढना है, जिन चुनौतियों का हमे मुकाबला करना है, उसमें हम हमारे तीर्थक्षेत्रों का क्या उपयोग कर सकते है ? एक व्यक्ति का यह कार्य नही है। सब लोगों को मिलजुलकर संघटित प्रयास करना है।

इस तीर्थ के पुनर्जन्म को करीबन साठ साल हुए है। भावुकता, भक्ति, श्रद्धा का एक परंपरागत युग समाप्त हुआ जा रहा है।

भौतिकवाद के अभिशाप से जैन समाज भी मुक्त नही है। फलतः धर्म के प्रति अश्रद्धा, नैतिक मूल्यों का पतन, विषमताओं में वृद्धि, संप्रदायवाद की कटुता, निम्न मध्यम श्रेणी में जीवनसंघर्ष की बिकटता, और सर्वसाधारण जनसमाजसे अलग थलग रहन सहन, आदि समस्याएँ जैन समाज को खोखली किए जा रही है।

इसलिये, नई पीढी में धर्म के प्रति रुचि और आस्था जागृत करना, उनमें जैन धर्म की मूलभूत एकात्मीयता से परिचित कराना, समाज के कमजोर वर्गों को अधिक कार्यक्षम बनाना, आम जनता की सेवा के कुछ क्षेत्र शुरु करना, आदि कुछ प्रवृत्तियाँ इस तीर्थक्षेत्र मे भी शुरु करना, तीर्थ के विकास के अनुरुप ही होगा।

यहाँ स्थित आयुर्वेदिक औषधालय से संलग्न एक आरोग्यधाम की स्थापना, आम जनता की सेवाका क्षेत्र बढाने में एक सफल कदम होगा। ऐसे भी समय समयपर कइ साधर्मी भाई बहन स्वास्थ्य लाभ हेतु यहाँ आकर कइ दिनोंतक रहते है। जैन अजैन दोनों इस नई सेवा से लाभान्वित हो सकते है। सूचित करते हुए हर्ष होता है की महावीर आरोग्य धाम का कार्य शुरु हो चुका है।

नई पीढी में शिबिरों के माध्यम से धार्मिक जागृति का कार्य कई जगह चल रहा है, अपने आसपास विशेषतः मध्यप्रदेश में। विदर्भ या महाराष्ट्र या पडौसी आंध्र में अभी तक ऐसी प्रवृत्ती शुरु नही हुई है। उचित ही होगा, यदि धार्मिक शिक्षा शिबिरों का नियमित रुपसे इस तीर्थ में आयोजन हो।

अपने समाज मे भी अति सम्पन्न, मध्यम व अति मध्यम प्रकार के धर्मबंधू है। आजकी परिस्थिती में, इस तृतिय वर्ग के लोगों की हालत इतनी खराब है की भोजन, कपडा और आवास की प्राथमिक आवश्यकताएँ भी ये पूरी नही कर पाते। और इनकी संख्या भी काफी है। दान से ये समस्या सुलझाई नही जा सकती। ऐसे लोगों को व्यापार या लघु उद्योग का प्रशिक्षण देना, तथा स्वतंत्र रुपसे व्येवसाय चलानेलायक साधन जुटा देना यह सारे सम्पन्न समाज का परम कर्तव्य है। इसलिये इस दिशा में विचार होकर कोई ठोस योजना बनाना भी जरुरी है।

उपर निर्दिष्ट समस्याओंपर जैन सम्मेलन के वार्षिक मंचपर चर्चाओं का हम आयोजन करेंगे। वैसे भी यदि कोई सेवाभावी व्यक्ति, हमें कोई रचनात्मक सुझाव भेजे, उसपर भी विचार किया जायगा। कार्य इतना विशाल है की सारे जैन समाज के सहयोग की आवश्यकता है।

प्रभू से यही प्रार्थना है की हम सब को ऐसी सद्बुद्धि और प्रेरणा दे की जिससे प्रभु पार्श्वनाथ के पुनः प्रगट होने के ऐतिहासिक शुभप्रसंग को चतुर्विध संघ एवं समस्त मानव समाज के कल्याण के लिए चरितार्थ कर सके।

●●●

९

दर्शकों की नजर से

जबसे इस तीर्थ का पुनर्निर्माण हुआ, तबसे समय समय पर कई गणमान्य व्यक्तियों ने इस तीर्थ को भेट दी है। कुछ ने अपने अभिप्राय लिखे है, जिसमेंसे चंद यहाँ दे रहे है।

" I, with Chanda Officials came here to have a view of the Parasnath Temple, and I am glad to see the beautiful image of Parasnath and other strong and excellent buildings, at the same time found the management of the temple in good hands.

There remained good work to be constructed and the community should take more interest to complete it.

I attended good many Jain places but did not see the satisfactory management as here. Moreover, I see not at other places, but only here, the protection of fishes in tanks, by which I am very glad Mr. Hiralal (Fattepuria) takes great troubles to devote his life in these works".

I am pleased to relieve the rent of the land which the Government has alloted to the temple and to order to open the stone-mine too for the works herein.

I am very much obliged to Mr. Hiralal that he has hospitably treated up to a dinner."

Bhandak, **Sd. F. G. Sly,**
13-4-1921. Chief Commissioner.

"I had no idea such a very beautiful place existed in Bhandak. Some of the work is really exquisite and the temple a place of such beauty as inspires reverence. It is a tribute to man's workmanship and the great care of those who are responsible for its everyday organisation."

Sincerely
Beatuce B. R. Weters
Christian Missionary from
11th Jan. 1940 Chanda.

"Bhandak is not merely a place of Historical interest. It is also still a very important place of pilgrimage for Jains in India. Today I saw about 300 pilgrims from Ahamedabad warshipping in the temple. It is to be said to the credit of management that their was not the slightest confusion in the temple. Everything is so neat and tidy.

The temple authorities have now applied for the concession of the name Bhandak into Bhadravati. I think action

is being taken on this application, and I suppose soon it will be possible to change the name of the town."

G. Nagarkatti
25th Nov. 1938. D. C. Chanda

" This is a marvellous place a reminder of glory that was India. Construction is still going on as and when donations come in. The religious and cultural value of such institutions is truly great. How we all wish that we had many more of such places."

K. M. Subramaniam
15-12-41 D C. Chanda.

" A veritable Shangrilla with the dignity of buildings, the peaceful atmosphere of the garden and the twilterings of the birds. How I wish I could escape to this oasis more often."

J. K. Atal
6-6-43 D. C. Chanda.

" I took an opportunity to visit this temple to-day, and was highly impressed by all that I saw the image of "Bade Bhagwan" in the land of the universe, is exquisite. It is a place of sojourn to all human beings. I wish the institution a great success in serving the humanity at large and poor classes in particular."

O. M. Chakradeo
22-6-43. I. T. O. Wardha, Chanda.

" It is well over 30 years since I last visited Bhandak. It is with the greatest pleasure that I have seen its religious antiquities, again and not least the embellishment of this temple and the care bestowed and the amenities provided for the pilgrims. The trust deserves all encouragement and thanks at the hands of devotees."

T. L. Grill
9-11-48. Commissioner

"श्री श्वेतांबर जैन मंडल के तत्वावधान में बनाया हुआ अर्वाचीन मंदिर अपने सुंदर सज्जित भवनोंमें प्राचीन श्री पारसनाथजी की मूर्ति को नये ढंग से स्थान देकर प्राचीन काल के कला, ज्ञान और दर्शन का रक्षण कर अत्यंत सराहनीय आदर्श का निर्माण इस जंगल के अंदर मंगल रुप है। जैन समाज इसके लिये धन्यवाद का पात्र है।"

रामगोपाल तिवारी
१८-२-५० प्र. सं. स. सचिव

"After 12½ years, we had another opportunity of visiting the Parasnath temple in distinguished company and on the day of the aniversary of the installation of the idol. In the mean time, the name of the townlet has been officially changed from Bhandak to Bhadrawati, the celebrated ancient city on the ruins of which Bhandak arose, and in the ruins of which the beautiful Parasnath statue was discovered about 45 years ago."

S. N. Mehta
I. C. S.,
19-2-50. Administrator M. P.

"इस भव्य मंदिर में श्री पार्श्वनाथजी का मंगलमय दर्शन हुआ। इस पवित्र भूमीपर सुहावने वातावरण में आत्मसंतोष का अनुभव किया।"

भद्रावती २४-३-५४ हरि विष्णू कामथ

"मंदिरास आज भेट दिली व मूर्तीचे दर्शन घेतले। प्रशांत वातावरणात अधिक वेळ घालविता आला असता तर अधिक समाधान वाटले असते. समितीची येथील व्यवस्था प्रशंसनीय आहे. माझ्या शुभेच्छा."

भद्रावती, यशवंतराव चव्हाण
१२-१२-१९५६. मुख्य मंत्री, मुंबई

"आज यह मंदिर एवं औषधालय देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। धर्मश्रद्धा यह एक मूल मानवी श्रद्धा है। इसका सही विकास मानव को देव बना सकता है। इस संस्था के द्वारा यह कार्य कई वर्षोंसे चल रहा है। लोकतंत्र जीवन में इस मानव श्रद्धा विकास का जो महत्त्व है उसपर शासन भी ध्यान देकर संस्था के कार्य को प्रोत्साहित करेंगे, इसमे मुझे संदेह नही।"

भद्रावती, दीनदयाल गुप्त
१२-१२-५६. श्रम मंत्री, बंबई

"This pen is not competant to write a description of God's place. This is a place where man can forget all his worries of life and try to probe into the eternal & get peace."

P. V. Bhambal
28-1-59. D. M. Wardha

"It gave me immense pleasure to go round the Parasnath temple. In particular I was impressed by the charitable dispensary run by the management. The place provides a nice atmosphere of service and devotion which helps considerably in moral upliftment Any new schemes to further the aforesaid cause should be viewed with favour by all concerned"

B. B. Lal
Dy. Director General of
Archaeology in India,
15 May 1959. New Delhi

"श्री पार्श्वनाथजींच्या मंदिराच्या परिसरात तीन दिवस मोकळ्या व शांत वातावरणांत राहण्याचा योग येऊन मन प्रसन्न झाले. मंदिर अत्यंत स्वच्छ सुव्यवस्थित व टापटिपीने राखलेले असून त्यांची देखरेख ठेवणारे कार्यकर्ते अतितत्पर व कर्तव्यदक्ष असल्याचे व आत्मीय स्नेहाने येणाऱ्या जाणाऱ्यांचे आदरातिथ्य करणारे असल्याचे प्रत्यक्ष अनुभवून त्यांचे विषयी आदर व कृतज्ञतेची भावना मनात निर्माण झाली आहे. नित्याच्या व्यवहारात उत्पन्न होणारी मनाची अशांतता दूर करण्यास या मंदिराचे शुद्ध वातावरण समर्थ आहे, असे वाटते. अशा या पवित्र स्थानाची जोपासना व वाढ उत्तम रीतीने होत राहो हीच श्री प्रभू चरणी प्रार्थना करतो."

मा. ल. गोळवलकर
३-१२-५९. गुरुजी रा. स्व. सं.

"This place has a very pious atmosphere and the temple and the beautiful image of the Lord removes from mind all worries and sorrows. In fact it may not be out of place to record here that in my dream last night, I beheld the hooded serpent and have understood the dream as a vision of the Lord Himself. I leave the place today in great confidence and faith that I have received the blessings of the

Lord. May this rememberance sustain me in my journey onwords towards moral and spiritual upliftment.

M. Venkatramnaiya
Supdt. Archaeology
Vishakapatnam

4-5-60.

"Today Bhadrawati is known as a center of Jain Pilgrimage on account of the imposing and majestic temple of Parswanath with a Dharamshala attached to it. The temple is very well maintained with its floors paved with marbles, walls painted with beautiful paintings, entrance door frames plated with silver richly ornamented with creepee and other delicate patterns. Its main entrance is flanked by two huge elephant figures and the sikhar painted and decorated with figure filles niches and temple replicas. The idol in padmasana posture is about six feet tall and is elegantly adorned by gold ornaments. Fine gardens have been laidout and maintained around the temple. A trust looks after the management. It is visited by Jains from all over India. The fairs celebrated in honour of Parswanath are largely attended."

Gazetteer of India
Maharashtra State
Chandrapur District

1973 Page 743

अ प्र मा द !

दीर्घकाल के बाद भी प्राणियों को मनुष्य जन्म का मिलना अति दुर्लभ है, क्योंकि कृत कर्मों के विपाक अत्यन्त प्रगाढ़ होते हैं। हे गौतम ! क्षण मात्र भी प्रमाद न कर।

विधान
श्री जैन श्वेतांबर मण्डल, भद्रावती

५ जून १९२१ को "श्री श्वेतांबर जैन मण्डल भांदक" इस नामसे उपरोक्त संस्था सोसायटीज रजिस्ट्रेशन ॲक्ट १९६० इसवी (Act No. XXI of 1960) के कलम ३ के अंतर्गत रजिस्टर कराई गई जिसका रजिस्टर जॉइंट स्टॉक कंपनी नागपूर के रजिस्टरमें क्रमांक ४२९-बी : ४३, दिनांक १६-२-४९ है। ये संस्था २५ जुलाई १९२१ को रजिस्टर की गई, किन्तु, जूना रेकॉर्ड जल जानेसे उपरोक्त नंबर सन १९४९ में दिया गया।

इसके पूर्व सन १९१२ से ही इस तीर्थ के पूर्ननिर्माण का कार्य शुरु हो गया था। उस समय "जैन सितंबरी सभा" के नामसे, इस तीर्थ का संचालन किया जाता रहा। मंदिर की प्रतिष्ठा होने के बाद, हमारे पूर्वजों ने विचारपूर्वक तय किया की इस तीर्थ के संचालन के लिये, विधि सम्मत, कुशल एवं कार्यक्षम ऐसी संस्था का निर्माण किया जाय, जो सदा के लिये इस तीर्थ के संचालन की जबाबदारी को उपयुक्त ढंगसे वहन कर सके।

इस संस्था का रजिस्टर्ड जो विधान है, वो दो भाग मे है। एक है "Memorandum of Association" और दुसरा है "Articles of Association."

दिनांक २८-३-७५ के साधारण सभा द्वारा संशोधित

श्री जैन श्वेतांबर मण्डल भद्रावती का उद्देशपत्र

Memorandum of Association

१. श्री जैन श्वेतांबर पार्श्वनाथ मंदिर भद्रावती, एवं इस मंदिर, एवं उपरोक्त 'मण्डल' के अधीन रहे हुए अन्य मंदिर, धर्मशालाएँ, औषधालय, गोशाला, भोजनालय, बंगले, खेती, बागबगीचे, भूमी आदि स्थावर सम्पत्ति, जो आज विद्यमान है, और जो भविष्य में 'मण्डल' के मालकियत या व्यवस्थापन के अन्तर्गत आएंगे उन सबकी समुचित व्यवस्था करना, और उनका विकास करना।

२. श्री भद्रावती पार्श्वनाथ तीर्थ के यात्रार्थ आनेवाले समस्त यात्रियों की साधु-साध्वीयों की ठहरने की और भोजन आदि की व्यवस्था करना, और इस उद्देश से विभिन्न इमारतों का निर्माण करना, एवं यात्री सेवाओं का प्रबंध करना।

३. सर्वसाधारण जीवनोपयोगी शिक्षा का विशेषत: धार्मिक एवं नीतिविषयक शिक्षा का सूत्रपात, विकास, एवं प्रबंध करना, और

इस उद्देशसे विद्यालय, महाविद्यालय, वसतीगृह आदि संस्थाएँ खोलना, इसके लिए भवन निर्माण करना, पाठ्य सामग्री खरीदना, बेचना आदि कार्य करना।

४. जैन दर्शन, जीवदया, मानवधर्म संबंधी प्राचीन एवं अर्वाचीन लेखकों के साहित्य का मुद्रण, प्रकाशन या प्रचार करना, और इस उद्देशसे आवश्यक संस्थाएँ खोलना।

५. चतुर्विध जैन श्रीसंघ के चारों अंगों की, एवं प्राणीमात्र के कल्याण की योजनाएँ बनाना और उन्हें मूर्त रुप देना।

६. सारे देश मे (भारत) और विशेषत: आसपास के प्रदेश में जैनागम मान्य सातों क्षेत्र की सहायता एवं सेवा करना।

७. अनाथालय, वृद्धाश्रम, महिलाश्रम, औषधालय, आरोग्यधाम, बेरोजगार सेवा सदन आदि का सूत्रपात एवं प्रबन्ध करना।

८. ऐसे अन्य सभी कार्य करना, जो उद्देशों की पूर्ति के लिए आवश्यक हो।

९. उपरोक्त उद्देशों की पूर्ति के लिए दान अथवा भेंट द्वारा निधि एकत्रित करना, चल अचल संपत्ति खरीद अथवा फरोक्त करना, निर्माण करना या किराये पर देना या लेना, या बक्षिस लेना या देना या आनुषंगिक सभी कार्य करना।

Articles of Association

-: नियम :-

१) नाम :- असोसिएशन का नाम "श्री जैन श्वेतांबर मण्डल, भद्रावती" (भांदक) रहेगा।

२) कार्यालय :- 'मण्डल' का कार्यालय श्री पार्श्वनाथ तीर्थ स्थान भद्रावती, जि. चंद्रपूर (महाराष्ट्र) मे रहेगा।

३) सदस्य :- निम्न 'मण्डल' रहेंगे-

(अ) श्री संघ द्वारा ५ जून १९२१ को निर्वाचित ३५ सदस्य, अथवा उनके स्थानपर समय समयपर निर्वाचित सदस्य।

(ब) वार्षिक साधारण सभा द्वारा नामजद जादा से जादा पांच अतिरिक्त सदस्य (उपरोक्त ३५ छोडकर) जिनका कार्यकाल तीन वर्ष का रहेगा।

४) सदस्य की पात्रता व अपात्रता :-

आर्टिकल (३) के अन्तर्गत

(अ) कोई भी इक्कीस वर्षीय या इससे अधिक उम्र की श्वेतांबर मूर्तिपूजक व्यक्ति 'मण्डल' का सदस्य हो सकता है।

(ब) कोई भी महारोगी, पागल या नादार व्यक्ति 'मण्डल' का सदस्य न बन सकता है, न रह सकता है।

(क) कोई भी व्यक्ति या सदस्य, जिसके तरफ 'मण्डल' की रकम (Amount) लेना है, वह यदि दो बार रजिस्टर्ड पहूंच पोस्टसे या उनके हस्ताक्षर प्राप्त करके सूचना देने के बावजूद कथित रक्कम न दे, तो उनकी सदस्यता समाप्त समझी जाएगी।

(ड) लगातार तीन साधारण सभाओं

में अनुपस्थित रहनेवाले सदस्य की सदस्यता स्वयमेव समाप्त हो जाएगी। किन्तु, जो सदस्य अनुपस्थिति की कारणसहित पूर्वसूचना सभा के पूर्व मण्डल को देंगे, उन्हें उस मिटींग मे अनुपस्थित नही समझा जायगा। जिनकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है, उन्हें फिरसे निर्वाचित करने का मण्डल को अधिकार रहेगा।

५) वार्षिक साधारण सभा :-

मण्डल की वार्षिक साधारण सभा हिसाबी वर्ष समाप्ति के तुरंत बाद अधिक से अधिक पांच माह के अन्दर किसी भी तारीख को मण्डल के कार्यालय में बुलाइ जायगी, और उक्त सभा में निम्न कार्यवाही की जा सकेगी।

(अ) पिछली दीपावली को समाप्त होने वाले वर्ष का रिपोर्ट, आयव्यय खाता और स्थितिविवरण पत्र (Balance Sheet) ऑडिट रिपोर्ट आदि पर विचार।

(ब) प्रबन्धकारिणी समिति व पदाधिकारीयों का निर्वाचन करना।

(क) सदस्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति करना, नामजद सदस्यों की एवं मण्डल के ऑडिटर की नियुक्ति करना।

(ड) विषयसूचि मे लिखित अन्य विषयों पर विचार व निर्णय।

(इ) अध्यक्ष के अनुमति से उपस्थित विषयों पर विचार।

६) विशेष साधारण सभा :-

मेमोरंडम ऑफ असोसिएशन या आर्टिकल्स ऑफ असोसिएशन में संशोधन, या ऐसेहि अन्य अति गंभीर विषयों पर विचार करने के लिए विशेष साधारण सभा आमंत्रित की जा सकेगी।

७) साधारण सभा :-

अन्य किसी भी अवसरपर जब आवश्यकता हो तब साधारण सभा आमंत्रित की जा सकेगी।

८) प्रबन्धकारिणी समिती एवं पदाधिकारी :-

(अ) मण्डल अपने वार्षिक साधारण सभामे, मण्डल के सदस्यों मे से मण्डल के संचालन हेतु निम्न पदाधिकारीयों का निर्वाचन करेगा।

एक अध्यक्ष, दो उपाध्यक्ष, एक सेक्रेटरी, एक जॉइंट सेक्रेटरी और एक आंतरिक ऑडिटर।

(ब) मण्डल का संचालन प्रबन्धकारिणी समिति करेगी। प्रबन्धकारिणी समिति कमसे कम नऊ और जादा से जादा ग्यारा सदस्यों की होगी। मण्डल के उपरोक्त पदाधिकारी एवं सदस्य प्रबन्धकारिणी समिति के पदाधिकारी रहेंगे।

कार्यकाल :-

(क) प्रबन्धकारिणी समिति एवं मण्डल के पदाधिकारीयों का कार्यकाल तीन वर्ष का रहेगा।

(ड) कार्यकाल के समाप्तिपर और नई

प्रबन्धकारिणी समिति के निर्वाचन तक जूनी प्रबन्धकारिणी समिति कार्य करती रहेगी ।

९) प्रबन्धकारिणी समिती के अधिकार और कर्तव्य :-

मण्डल के घोषित उद्देशों की पूर्ति के लिए, मण्डल द्वारा पारित प्रस्तावों के अनुरुप प्रबन्धकारिणी समिति मण्डल के कार्यों का संचालन एवं देखरेख करेगी । विशेषतः

(अ) बँक में खाता खोलने तथा संचालन संबंधी प्रस्ताव पारित करना ।

(ब) यात्रियों या कर्मचारियों के शिकायत पर या उनके विरुद्ध शिकायतोंपर विचार करना ।

(क) मण्डल की ओरसे या मण्डल के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही को सम्मति प्रदान करना ।

(ड) किसी भी कार्य के लिए उपसमितियाँ नियुक्त करना ।

(इ) विशेष आवश्यकता पडनेपर प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्यों की पत्र द्वारा आवश्यक विषय या प्रस्ताव की स्वीकृति बहुमतिसे ली जा सकेगी । और इस कार्यवाही की नोंद अगली प्रबन्धकारिणी समिति की सभा में ली जाएगी ।

१०) सभाओं की सूचना :-

(अ) किसी भी साधारण सभा की लिखित सूचना स्थान, समय और विषय सूचि के साथ मण्डल के प्रत्येक सदस्य को सभा के कमसे कम १५ दिन पूर्व अंडर सर्टिफिकेट ऑफ पोस्टींग भेजी जाएगी ।

(ब) प्रबन्धकारिणी समिति की सभा की लिखित सूचना सभा के कमसे कम सात दिन पूर्व अंडर सर्टिफिकेट ऑफ पोस्टिंग भेजी जाएगी ।

११) कोरम (गणपूर्ती) :-

(अ) वार्षिक या साधारण सभा का कोरम कुल रजिस्टर्ड सदस्यों का $\frac{1}{8}$ होगा ।

(ब) विशेष साधारण सभा का कोरम कुल रजिस्टर्ड सदस्यों का $\frac{1}{5}$ होगा ।

(क) प्रबन्धकारिणी समिति की सभा का कोरम $\frac{1}{3}$ होगा ।

(ड) कोरम के अभाव में कोई भी सभा अगले किसी तारीख के लिए स्थगित की जा सकेगी, और ऐसे स्थगित सभा की पूर्वसूचना नियमानुसार भेजी जाएगी । किन्तु स्थगित तारीख को भी यदि कोरम पूर्ण नही हुआ, तो भी विषयसूचि अनुसार जो कि पूर्व सभा के विषयसूची से भिन्न नही होगी, कार्यवाही की जाएगी ।

१२) रिक्विजिशन सभा :-

मण्डल के कोई भी ग्यारा सदस्य, किसी विशेष कार्य के लिए सभा बुलाने का आवेदन अपने हस्ताक्षरों से अध्यक्ष महोदय को भेज सकते है । ऐसा आवेदन आनेपर अध्यक्ष महोदय

रिक्विजिशन सभा बुलाने का प्रबंध करेंगे। मात्र एक माह के अंदर ऐसी सभा नहीं बुलाई गई तो कथित ग्यारा हस्ताक्षर कर्ता सदस्यों को यह अधिकार प्राप्त हो जायगा कि वे नियमानुसार अपने हस्ताक्षरों से ऐसी सभा मण्डल के कार्यालय में आमंत्रित कर सकेंगे, और उस सभा की कार्यवाही कर सकेंगे।

१३) सभा की अध्यक्षता :-

किसी भी सभा की अध्यक्षता, मण्डल के अध्यक्ष, उनके अनुपस्थिति में उपस्थित उपाध्यक्ष और उनके भी अनुपस्थिति में उपस्थित सदस्यों द्वारा निर्वाचित सदस्य अध्यक्षपद ग्रहण करेंगे. मात्र जिस सभा में अध्यक्ष पर स्वयं अविश्वास प्रस्ताव हो, उस सभा की अध्यक्षता मण्डल के अध्यक्ष नहीं कर सकेंगे।

१४) अचल संपत्ति की घोषणा :-

श्री जैन श्वेतांबर मण्डल भद्रावती की सारी भूमी एवं उस भूमीपर आज तक निर्मित या भविष्य में निर्माण होनेवाले सारे मंदिर, सारे धर्मशालाओं के कमरे, हॉल्स, बंगले, उपाश्रय, औषधालय, आरोग्यधाम, विद्याभवन, संग्रहालय, भोजनालय, अन्य इमारतें, बागबगीचे, कुंअे, खेती, आदि जहाँ कहीं भी हो वह सब इस आर्टिकल द्वारा मण्डल की सम्पत्ति घोषित की जाती है। (१९२१ में पारित आर्टिकल १४ से उद्धृत) व्यक्तिगत या समूह में कोई अन्य इस संपत्ति का कभी भी कानुनन हस्तांतरण के अभाव में, मालक नही समझा जाएगा। साथ ही उपरोक्त सारी संपत्ति पर सदा सर्वदा कानूनन कबजा मण्डल का ही समझा जाएगा।

१५) प्रस्ताव :-

किसी भी सभा में प्रस्तावक व अनुमोदक मिलकर अध्यक्ष के अनुमतिसे कोई भी प्रस्ताव रख सकते है। मात्र अध्यक्ष या सेक्रेटरी द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों को अनुमोदन की आवश्यकता नही रहेगी। संविधान संशोधन प्रस्ताव छोडकर अन्य सभी प्रस्ताव साधारण बहुमतिसे पारित किए जाऐंगे। जहाँ मत विभाजन बराबरी का हो, वहाँ सभा के अध्यक्ष विशेष मताधिकार का प्रयोग कर सकते है। संविधान संशोधन पारित करने के लिए उपस्थित सदस्यों के $\frac{३}{५}$ सदस्यों की बहुमति आवश्यक होगी।

१६ अध्यक्ष के अधिकार :-

(अ) मण्डल के अध्यक्ष को मण्डल के सारे कार्योंपर देखरेख करनेका और आवश्यक निर्देश देनेका अधिकार रहेगा।

(ब) असाधारण परिस्थितियों में अध्यक्ष को मण्डल के सर्वसाधारण सभाके सर्व अधिकार रहेंगे, परंतु शीघ्रातिशीघ्र वह कार्यवाही साधारण सभा के मंजूरी के लिए प्रस्तुत करनी होगी।

(क) अध्यक्ष के निर्देश पर यदि सेक्रेटरी मण्डल की कोई भी सभा आमंत्रित नही करते है तो अध्यक्ष को अधिकार होगा कि वे अपने हस्ताक्षरसे ऐसी सभा आमंत्रित कर सके।

१७) सेक्रटरी के अधिकार और कर्तव्य :–

मण्डल और प्रबन्धकारिणी समिति के आदेशानुसार मण्डल के प्रमुख अधिकारी के रुप में सेक्रेटरी को वे सब अधिकार प्राप्त रहेंगे, जो मण्डल के दैनंदिन कार्य संचालन के लिए आवश्यक हो। मण्डल की ओर से या मण्डल के विरुद्ध किसी भी सरकारी, निमसरकारी न्यायालय या कार्यालय में सेक्रेटरी मण्डल का कानूनन प्रतिनिधित्व करेगा। साथ ही मण्डल की ओर से या विरुद्ध में कोई भी दावा सेक्रेटरी के नामसे किया जा सकेगा। विशेषत:

(अ) मॅनेजर सहित मण्डल के किसी भी कर्मचारी को नियुक्त, बडतर्फ या दंडित करना।

(ब) मण्डल या प्रबंधकारिणी के किसी भी सभा को निमंत्रित करना।

(क) मण्डल के चल अचल सम्पत्ति के सुरक्षितता एवं वृद्धि के लिए कर्मचारियों को योग्य सूचनाएँ देना, एवं मार्गदर्शन करना।

(ड) यात्रि सेवाएँ, बागबगीचे, खेती, गोशाला, औषधालय, उत्सव, महोत्सव, हिसाब किताब, पत्रव्यवहार आदि कार्योंका आयोजन निर्देशन और देखरेख करना।

(इ) बजट के अतिरिक्त विशेष आवश्यकता होनेपर प्रबन्धकारिणी समिति द्वारा निर्धारित मर्यादा में अतिरिक्त खर्च करना।

(ई) मण्डल की ओरसे किसी को आम मुखत्यार या खास मुखत्यार नियुक्त करना।

(उ) मंडल के प्रांगण में अवांछनीय अनुचित, प्रक्षोभक या शांति भंग करनेवाली किसी भी गतिविधिपर रोक लगाना।

(ऊ) किसी भी सभा के लिए रिपोर्ट या प्रतिवेदन, बजट, प्रस्ताव आदि तैयार करना।

(ए) बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट ॲक्ट, गोल्ड कंट्रोल ॲक्ट, अथवा अन्य किसी भी विद्यमान कानून के अन्तर्गत आवश्यक कागदपत्र, रिटर्नस्, स्टेटमेन्टस् आदि दाखिल करना।

(ऐ) मण्डल या प्रबन्धकारिणी सभाओं का प्रोसिडींग बुक लिखना।

(ओ) ऐसेही प्रासंगिक और आवश्यक सभी कार्य करना।

(औ) उपरोक्त सभी कार्य सेक्रेटरी अधिकार रुपसे कर्तव्यदक्षता से सम्पन्न करने के लिए जिम्मेदार रहेंगे।

१८) आंतरिक ऑडिटर के अधिकार और कर्तव्य :–

आंतरिक ऑडिटर को यह अधिकार होगा कि वे कभी भी मण्डल के हिसाब किताब, रजिस्टर्स, स्टॉक्स, कॅश बॅलन्स आदि की जाँच कर सके और उनका यह कर्तव्य होगा की हर तीन माह में एक बार पूरा ऑडिट करके अपनी रिपोर्ट अध्यक्ष या सेक्रेटरी को दें।

१९) मॅनेजर के अधिकार और कर्तव्य :–

मण्डल के मॅनेजर को वे सब अधिकार प्राप्त रहेंगे जो सेक्रेटरी उन्हे सौंपे, और उन सब कर्तव्यों के परिपालन के लिए वे जिम्मेदार रहेंगे, जो की मंडल के विभिन्न गतिविधियों के दैनंदिन संचालन में अपेक्षित है। विशेषत:

(अ) मण्डल की भद्रावती में स्थित चल सम्पत्ति मॅनेजर में संप्राप्त (Vest) रहेगी।

इसकी उचित रक्षा करना मॅनेजरका दायित्व होगा।

(आ) सेक्रेटरी या अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार मण्डल के सभी कार्य करना, एवं उनपर चौकसाइपूर्वक नजर रखना।

(इ) मण्डल का हिसाब किताब, रजिस्टर्स, रेकॉर्ड आदि अद्यावत तयार करना और व्यवस्थित रखना।

(ई) कर्मचारियों के कार्योंपर देखरेख रखना एवं तत्संबंधी रिपोर्ट सेक्रेटरी को देना।

(उ) यात्रियोंकी समुचित व्यवस्था करना, एवं उनकी शिकायतें तत्काल दूर करना।

२०) संम्पत्ति की सम्प्राप्ति (VESTING) :-

मण्डल की सारी अचल सम्पत्ति प्रबन्धकारिणी समिति मे सम्प्राप्त (VEST) रहेगी। फलतः प्रबन्धकारिणी समिति के सारे सदस्य इस मण्डल के विश्वस्त (TRUSTEES) समझे जायेंगे।

२१) मर्यादाएँ :-

(अ) मण्डल के प्रांगण में मांसाहार, मद्यपान, जुवा, व्यभिचार आदि बिल्कुल निषिद्ध है।

(आ) मण्डल का कोई भी सदस्य यदि मंडल के कार्यों में विघ्नरुप विक्षेप डाले, संघर्षमय या तनावपूर्ण वातावरण निर्माण करे, या मण्डल के निर्धारित उद्देशों नीतियों या हितों के विपरीत कार्य करे, तो मण्डल की साधारण सभा को अधिकार होगा कि उसे मण्डल की सदस्यतासे निष्कासित कर दे।

(इ) मण्डल का हिसाबी वर्ष दीपावली से दीपावली रहेगा।

२२) कोष :-

समय समयपर निर्धारित अधिकतम मर्यादा के उपरान्त जितना भी कोष मण्डल के कार्यालय मे जमा होगा, वह सब मण्डल द्वारा मान्य बँक मे जमा करना होगा।

२३) विधान मे संशोधन :-

मेमोरंडम ऑफ असोसिएशन या आर्टिकल्स ऑफ असोसिएशन में कोई भी संशोधन विशेष साधारण सभा में उपस्थित सदस्यों के $\frac{3}{4}$ बहुमतिसे पारित किया जा सकेगा। मात्र ऐसे संशोधन का प्रारुप विशेष सभा आमंत्रित करने के सूचना के साथ हर सदस्य को अग्रिम भेजना होगा। संशोधन के लिए बुलाई गई विशेष सभा, कोरम के अभाव में कोई भी संशोधन पारित नही कर सकेगी।

●●●

महान तपस्वी योगीमुनी श्री १०८ मोतीलालजी महाराज

जिसने अपनी आंख से न देखा हो, वह शायद हि विश्वास करे कि ऐसा अद्भुत योगीमहापुरुष कभी भद्रावती के परिधि में साक्षात विचरता था। 'मोतीलालजी महाराज' के नामसे आज भी हजारों आत्मार्थी उनको जानते है। यद्यपि आज वे हमारे बीच नहीं है, उनकी अनुभूति लिए भक्तगण उनका स्मरण करके कृतार्थता का आस्वाद लेते है।

अपने मातापिता के सात बालकों मे से ये अन्तिम थे। दुर्भिक्ष के जमाने में मातापिता ने इन्हे यतियों के सुपुर्द कर दिया। बाल्य-काल में घरसे निर्वासित, पालकोंद्वारा उपेक्षित यह बालक अनेक यातनाएँ भोगता हुआ भी तत्कालीन विषम परिस्थितियोंमें अपनी आत्मा को निखारता हुआ वैराग्यभाव में दृढीभूत हो रहा था। इन्होंने यतिजीवन स्वीकार कर लेने पर भी उनके अंतरंगमें अशांति थी और उनका झुकाव आत्मचिंतन की ओर हो गया था। पूर्वसंस्कार बल से दिनप्रतिदिन वे नि:संगी स्वभाव के बनते चले थे और ऐसे ही समय में वे विहार करते करते एक दिन वरोरा (जि. चांदा) आ गये और लम्बे अर्से तक वरोरा के उपाश्रय में ही उनका वास्तव्य रहा। यहां पर भी उनमें नि:संगी वैराग्यपूर्ण स्वभाव की झलक स्पष्ट दिखती थी।

इसी बीच उनके आध्यात्मिक उत्थान की शुभ घडी आ पहूंची और एक दिन रात्री को ३ बजे वरोरा के उसी उपाश्रय में निद्रामग्न स्थितिमें उन्हे स्वप्न आया और उसमें "उन्होंने अपना ओघा, मुहपत्ती, पात्रा एवं रजोहरणादि आलमारी में रख दिया और वे पहाड पर चढ गये" करीब ३।। बजे उनकी आँखे खुलते ही वे उठ बैठे और गंभीर चिंतन के बाद उन्होंने इसे आत्मलाभ के लिये शुभसंकेत मानकर जैसा स्वप्नमें देखा तत्काल वैसा ही किया। उपाश्रय की दिवाल में कँवाडवाली एक छोटी आलमारीमें उन्होंने ओघा, रजोहरण, पात्रादि सभी परिग्रह रख दिया और सच्चे अर्थों में "संयम प्राप्ति" के लिये कुछ भी परिग्रह साथमें न लेते हुए भद्रावती के जंगल में चल दिये। बैसाख और जेठ की दुपहरी में घनघोर वर्षा-काल एवं जाडे के दिनों में भी उसी अवस्था में पहाड पत्थरों पर एवं सर्प व्याघ्रादि जंगली हिंस्र प्राणियों का स्वच्छंदतापूर्ण वासस्थान या विश्रामस्थान "विंझासन" की गुफाओं में वे अविरत ध्यान साधना करते हुए कठोर तपश्चर्यापूर्ण जीवन बिताने लगे। ८-१५ दिनों में एकाध वक्त जब कभी भूख सताती तब कहीं

भांदकगांव में जाकर योग्यता एवं शुद्धता महसूस होने पर किसीके भी यहां से दोनों हाथोंकी अंजली में ही आहार एवं जल ग्रहण कर लेते थे। और बाद मे फिर जंगल में चल देते। पूज्य महाराज साहब अपनी योगसाधना मे निश्चल थे। उनकी चारों ओर कभी कभी हिंस्र प्राणी व्याघ्र सर्पादि आकर बैठते थे। इनके सान्निध्य में वे भी निर्वैर हो जाते थे। योग साधनाका यही महान रहस्य है। क्योंकी योगी "आत्मवत् सर्व भूतेषु" को प्रत्यक्ष अनुभूति द्वारा आत्मसात् करता है।

जब योग्य समय आ गया और पूज्य मोतीलालजी महाराज साहब को ऐसा लगा की अब मेरे कर्मपटल जल गये है और आगे ज्ञानार्जन की आवश्यकता है, तब पुनः वे वरोरा उपाश्रय में जाकर "संयम रक्षणार्थ" वे समी परिग्रह ओघा, मुहपत्ती, रजोहरणादि पुनः स्वयमेव ग्रहण किये। और वरोरा से नागपुर के लिये विहार किया। नागपुर आकर उन्होने श्रीसंघ से संस्कृत पढानेके लिये पंडित की व्यवस्था करने की इच्छा व्यक्त करते ही श्रीसंघने तत्काल व्यवस्था कर दी। उज्वल आत्मा को ज्ञान प्राप्ति अल्पायासमेही हो जानेसे महाराज साहब को संस्कृत के सूत्रादि की गहनताको प्राप्त करनेमें देर न लगी। समय आते ही उन्होने मुनिजीवन प्राप्त कर लिया और स्वयंभु साधु बन गये। यथार्थ में तो वे शुरुसे ही निस्परिग्रही थे। क्योंकी बहिरंग के दस एवं अंतरंग के चौदह परिग्रहों के वे त्यागी थे। इन परिग्रहों के प्रति किंचित् भी मूर्च्छाभाव शेष नहीं था, इसी लिये उनमे सही साधुजीवन का साक्षात्कार उनके दर्शनमात्र से किसीको भी होता था। साधा श्रेयार्थी जीवन, भ्रमरवत् माधुकरी वृत्ति से ही मिला सो भोजन, शुद्ध खादी का वेष तथा संयम के लिये आवश्यक और देह वहन कर सके इतनाही परिग्रह। उनकी दिनचर्या विशेष थी। जंगलों में पहाडोंपर या गुफाओंमे वे ठहरते थे। वे केवल गोचरी के लिए या उपदेश देने के लिए जन-संपर्क में आते थे। शेष समय वे ध्यान एवं चिंतन मे मस्त रहते थे।

पूरबमें चंद्रपुर, पश्चिममे बालापुर, दक्षिणमे कुलपाकजी और उत्तरमें नागपुर, सिवनी आदि यही उनका विचरण क्षेत्र था। भद्रावती को यदि केन्द्रबिन्दू माना जाय तो आसपास के क्षेत्र उनके विहार का प्रमुख परिधि था। यों अनेक बार उन्होने श्रीसिद्धक्षेत्र पालिताणादि तीर्थयात्राएँ भी की थी।

सदासे निःसंगी वृत्ति होने के कारण विहार में भी कभी उन्होंने साथमें न कोई साथी रखा न परिचारक। बगैर पूर्वसूचना दिए एक जगह से दुसरी जगह चल देना उनका स्वभाव था। जेठ की तलमलती दुपहरी में चांदा से भद्रावती २० मील का फासला चल देना उनके लिए कोई कठीन विहार नही था। आहार पानी कहां मिलेगा, इस चिन्ता से वे सदैव निश्चिंत थे। मिला तो ले लिया, नहीं मिला तो उपवास उनका कौन छीननेवाला था!

उनकी दृष्टी में जात पात का कोई प्रश्न था ही नहीं। सुपात्र देखकर किसी भी जैनेतर

के यहाँसे भी वे निःसंकोच गोचरी ग्रहण करके धर्मलाभ देते थे । इस क्षेत्र के ब्राम्हण, वैश्य, शुद्र सभी उन्हे भक्तिभाव से ही पूज्य मानते थे । और ऐसे अनेक भक्तों को उन्होने धर्मलाभ एवं उपदेश दिया है । योगाभ्यासी आत्मार्थी मुमुक्षुओंको वे आचार्य शुभचंद्राचार्य विरचित ज्ञानार्णव, कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचंद्राचार्य प्रणीत योगशास्त्र, श्रीमद् राजचंद्र का उपदेश संग्रह "श्रीमद् राजचंद्र" आदि ग्रंथोंका अध्ययन एवं परिशीलन करनेको कहते थे । यों वे अनेकान्तवाद अर्थात स्याद्वाद दृष्टीकोण को ही ग्राह्य मानते थे और इसीलिये वे वादविवाद से सदैवही दूर रहे ।

जीवन के अन्तिम दो दशकों तक उन्होंने बराबर वर्षितप किया । एक दिन उपवास, दुसरे दिन एकासणा, तिसरे दिन फिर उपवास यही क्रम बीसों बरस चला । इस प्रकार तप को भी उन्होंने ऐसा तपाया कि वे एक आदर्श तपस्वी बन गये क्योंकीं जितने वे तपस्वी थे उतने वे ज्ञानी भी थे । ज्ञान की गंगा को वे स्वयं खींच लाये । संस्कृत-प्राकृत अर्धमागधी एवं पाली सूत्रों के गूढार्थ को आत्मसात करनेके लिये शब्दकोष बुलाकर परिश्रमपूर्वक अगम्यता को गम्य किया । उनके आचार विचार से संपर्क मे आनेवाले किसी भी व्यक्ति को यही अनुभूति होती थी कि यथार्थ मे उनके पास धर्म का मर्म है !

पुरातत्त्व विभाग के एक कर्मचारीने महाराज साहेब जब विंझासन की गुफामें विराजमान थे, तब उनके वहाँ रहनेपर फिजूल में आपत्ति की । बस, महाराज साहेब वहाँसे चल पडे और विहार करते करते भोपाल तक निकल गये । वृद्धावस्था थी, स्वास्थ्य गिर रहा था । फिरभी वहाँ भी उनकी एकांत योगसाधना एवं तपस्या यथावत् चल रही थी । एक दो चातुर्मास वहाँ किये । वहाँ के श्रीसंघ की भी उनपर असीम श्रद्धा-भक्ति थी । वहीं उनका स्वर्गवास विक्रम संवत् २००० कार्तिक बदी १२ को हुआ । वहाँ उपाश्रय के जिस तलघर में वे आत्मसाधन करते थे वहाँ उनकी पादुका की प्रतिष्ठा विक्रम संवत् २००६ माघ सुदी १ को की गई है, और आज भी उनकी पावन स्मृति आध्यात्मिकताको स्पंदित करती है ।

शिष्य बनाने का मोह उन्हें कभी नहीं था । झंवरी परिवार के एक भेंरुजी दृढतापूर्वक सदा उनके साथ रह कर महाराज साहब को विशेष आग्रह करके मना लिया और महाराज साहब ने उन्हें दीक्षित करके 'चारित्रमुनी' नामसे विभुषित किया । वे भी दृढनिश्चयी एवं महान तपस्वी थे, और उपवास के ८४ वे दिन उनका स्वर्गवास भद्रावती में हुआ । श्री जैन श्वेतांबर मंदिर के प्रांगण में बने 'तपस्वी मंदिर' मे गुरुशिष्य की मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित कर उनके भक्तगणों ने उनकी पावन स्मृति को स्थायित्व प्रदान किया है ।

•••

मेरी भावना

(पं. जुगलकिशोर मुख्तार)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते
सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का
निःस्पृह हो उपदेश दिया :
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा
या उसको स्वाधीन कहे,
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह
चित्त उसीमे लीन रहे ::१::

विषयों की आशा नही जिनके
साम्य भाव धन रखते है,
निज पर के हित साधन में
जो निशदिन तत्पर रहते है :
स्वार्थत्याग की कठिन तपस्या
बिना खेद जो करते है,
ऐसे ज्ञानि साधु जगत के
दुःख समुह को हरते है ::२::

रहे सदा सत्संग उन्हीका
ध्यान उन्ही का नित्य रहे,
उनही जैसी चर्या में
यह चित्त सदा अनुरक्त रहे :
नहीं सताऊं किसी जीवको
झूठ कभी नही कहा करूं,
पर धन वनिता पर न लुभाऊं
संतोषामृत पिया करूं ::३::

अहंकार का भाव न रखूं
नहीं किसी पर क्रोध करूं,
देख दूसरों की बढती को
कभी न इर्ष्या भाव धरूं :
रहे भावना ऐसी मेरी
सरल सत्य व्यवहार करूं,
बने जहांतक इस जीवन में
औरों का उपकार करूं ::४::

मैत्री भाव जगत मे मेरा
सब जीवों से नित्य रहे,
दीन दुःखी जीवोंपर मेरे
उरसे करुणा स्रोत बहे :
दुर्जन क्रुर कुमार्गरतों पर
क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रखूं मै ऊनपर
ऐसी परिणिती हो जावे ::५::

गुणीजनों को देख हृदय में
मेरे प्रेम उमड आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा
करके यह मन सुख पावे :
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मै
द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण ग्रहण का भाव रहे नित्
दृष्टी न दोषों पर जावे ::६::

कोई बुरा कहे या अच्छा
लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षोंतक जीऊं या
मृत्यु आज ही आजावे :

अथवा कोई कैसा ही
भय या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा
कभी न पद डिगने पावे ::७::

होकर सुख में मग्न न फूलूं
दु:ख में कभी न घबराऊं,
पर्वत नदी स्मशान भयानक
अटवी से नहीं भय खाऊं :

रहे अडोल अकम्प निरंतर
यह मन दृढतर हो जावे,
इष्टवियोग अनिष्टयोग में
सहनशीलता दिखलावें ::८::

सुखी रहे सब जीव जगतके
कोई कभी नही घबरावे,
वैर पाप अभिमान छोड जगत के
नित्य नये मंगल गावे :

घर घर चर्चा रहे धर्म की
दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ग्यान रचित उन्नत कर अपना
मनुज जन्म फल सब पावे ::९::

इति भीति व्यापे नहीं जगमे
वृष्टि समयपर हुआ करें,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी
न्याय प्रजा का किया करें :

रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले
प्रजा शांति से जिया करें,
परम अहिंसा धर्म जगत में
फैल सर्व हित किया करें ::१०::

फैले प्रेम परस्पर जगमे
मोह दूर पर रहा करें,
अप्रिय कटुक कठोर शद्ब नही
कोई मुखसे कहा करें :

बनकर सब युग 'वीर' हृदय से
देशोन्नति रत रहा करें,
वास्तु स्वरूप विचार खुषी से
सब दु:ख संकट हरा करें ::११::

शास्त्रों का बीहड जंगल हमारे सामने खडा है। वह भी अगम्य भाषा में। जो अनुवाद है, उसके भी ढेरों अंबार लगे है। किन्तु आज के तेज रफ्तार वाले जीवन में, इन्हे पढने का समझने का, या स्वाध्याय करने का अवकाश कहाँ ? साधु संत कहेंगे यह बहाना है। पर जिसने आज के 'कुलियुग' का अनुभव किया है, वह विवश है, मजबूर है।

ऐसे विषम वतावरण में "मेरी भावना" एक वरदान है। गागर में सागर की भाँति धर्म का मर्म इसमे भरा हुआ है। कोइ भी मतावलंबी क्यों न हो, धर्म में जिसकी आस्था है, उसे धर्म के संपूर्ण सार के इसमे दर्शन होंगे।

ज्ञानयुक्त आचार को हि प्रभू ने सही धर्म माना है। "मेरी भावना" में निहीत इस आचार धर्म को जितना भी संभव हो सके उतना हम अपने जीवन में अपना सके तो निश्चय ही हम स्वयं की शांति प्राप्त कर सकते है, और, औरों को भी शांति प्राप्त करवाने में सहाय कर सकते है।

"मेरी भावना" का नित्य पाठ, मनन, चिंतन अंतःकरण से करें, इसी एकमात्र उद्देश से, "स्वप्न देव" में इसे प्रकाशित किया है।

●●●

समाप्त

असली दुश्मन

बेकार परेशान होते हैं आप,
दुश्मन कोई नहीं है आपका
है यदि कोई तो
वह है सिर्फ 'आप'
इसे पहचानिये मिट जायेगा संताप !

क्या बटोरोगे ?

कितना बटोरोगे ?
असंख्य पर्वत की
इच्छाओं के पहाड के आगे
शुन्य ही सिद्ध होंगे !
बटोरने का मोह ही हैं,
तो फिर बटोरो
संतोष को रज
अपरिग्रह के कण !

वचन-नियंत्रण

साधक बनने की हुक
अन्तर में जागृत है मित्र !
तो जागृत करो फिर
अपने वचन नियंत्रण की भावना
यही सर्प है जिसे मुष्किल है थामना

– दुर्गाशंकर त्रिवेदी

प्राप्तिस्थान :

श्री जैन श्वेतांबर मंडल,
जैन मंदीर, भद्रावती. जि. चंद्रपुर

प्रकाशकः-
श्री जैन श्वेतांबर मंडल,
भद्रावती.